Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13. A-32. Hindi Gītā 2

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Bhagavadgītā.

भगवद्गीता भाषा

जिस्में

श्रीकृष्णजीने अर्जुनअपने भक्तसे योग
शास्त्रादि बर्णन किया है ॥

जिस्को

हरिबल्लभजीने भाषा पद्यमें रचा ॥

वही

स्थानलखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ानेमें छापा गया ॥

फरवरी सन् १८८४ ई० ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

भगवद्गीता भाषा ॥

जिसमें श्रीकृष्ण और अर्जुनका सम्बाद है ॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥ धर्मक्षेत्रकुरुक्षेत्रमें मिलेयु
द्धकेसाज॥संजयमोसुतपांडवनिकीन् होंकैसे
काज १ ॥ संजयउवाच ॥ पांडवसेनाव्यूहल
खि दुर्योधनढिगआय ॥ निजआचारय
द्रोणसोंबोलेऐसेभाय २ पांडवसेन ।अति

बड़ीआचारयतूदेख ॥ धृष्टद्युम्नतवशिष्यने
व्यूहरच्योजुविशेष ३ शूरधनुषधारीबड़े
अर्जुनभीमसमान ॥ द्रुपदमहारथऔरपुनि
हैंविराटयुयुधान ४ धृष्टकेतुअरुकाशिपति
चेकितानबलवंत ॥ कुन्तभोजअरुसैब्यपुनि
पुरजितशत्रुनिकन्त ५ युधामन्युअतिबिक्र
मीउत्तमौजरणधीर ॥ द्रौपदिसुतअभिम
न्युयेमहारथीबरबीर ६ मोसेनामेंजेबड़ेतेस
बगिनक्षितिराज॥ नीकेजानोतुमतिन्हैंधरेयु
द्धकेसाज ७ तुमअरुभीषमकर्णकृपजिनजी
तेसंग्राम ॥ भूरिश्रवाबिकर्णअरुअश्वत्थामा
नाम८ औरौबहुतेशूरहैंमोलगितजेंजुप्रान॥
भांतिभांतिआयुधलिये सनेयुद्धबलवान ९
मोसेनाअसमर्थसोभीषमराखतजाहि ॥ पर

सेनाअसमर्थसोराखतभीमसुवाहि १० आ
सपासमोव्यूहकेतुमसोठाढ़ेहोहु॥ भीषमकी
रक्षाकरौमनमेंधारिकैकोहु ११ दुर्य्योधनको
हर्षकोभीषमजूचितचाय॥ सिंहनादउच्चैंकि
योदुस्सहशंखबजाय १२ तबहिंशंखभेरीप
णवआनकगोमुखभूरि ॥ ताहीछिनबाजत
भयेशब्दरह्योभरिपूरि १३ श्वेतबरनघोड़े
लगेदीरघरथहिबनाइ॥ हरिअर्जुनतापरच
ढ़ेरहसेशंखबजाइ १४ देवदत्तअर्जुनलयोपां
चजन्ययदुराय॥भीष्मभयानकभयदय।पां
डवशंखबजाय १५ नृपतियुद्धसिरहूकियो
अनंतबिजयकोघोस॥पुनिसहदेवजुनकुल
नेमणिपुष्पकसुघोस १६ महाधनुर्द्धरका-
शिपतिरथीशिखंडीजान॥ धृष्टद्युम्नविराट

अतिबलीसात्यकिहिमान१७ द्रुपदद्रौपदी
सुतसबैऔरसुभद्रापूत ॥ अपनेअपनेशंखलै
धुनिकीन्हीतासूत १८ फट्योहियोकौरवन
को शब्दसुन्योताबार ॥ पृथ्वीअरुआकाश
में परिरह्योगुंजार १९ देखेसुतधृतराष्ट्रके
अर्जुनधनुषसँभारि ॥ कपिबरताकोध्वजल
सै शस्त्रनपरतनिहारि २० ॥ अर्जुनउवाच ॥
अर्जुनकहैजुकृष्णसों मेरेचितयहचिन्त ॥
दुहुसेनाकेमांझरथ ठाढ़ेकरमोमित्त २१
जबलगदेखोंहोंइन्हें जुरेयुद्धकेदाय ॥ कौन
कौनसोंहोंलरौं यारणमेंसमपाय २२ युद्ध
करनयोधाजिते आयेहैंयासाज ॥ दुरबुद्धी
कौरवनके भलेकरनकेकाज २३ ॥ संजयउ-
वाच ॥ ऐसेकहिश्रीकृष्णजू सुनिअर्जुनकी

बात ॥ दोऊसेनामांझरथ लैराख्योताघात
२४ ॥ भगवानउवाच ॥ भीषमद्रोणाहिआदिदै
नृपजुहतेताठोर॥अर्जुनसोंबोलतभये कहि
कौरवकीओर २५ अर्जुनतेदेखेसबैपितापि
तामहभाय॥ गुरुमामाभैयासखा सुतनाती
केदाय २६ ससुरसुहृदबंधुसकल दोऊसेना
माह ॥ तिनहिंदेखिकरुणाभई तबबोलेनर
नाह २७ ॥ अर्जुनउवाच ॥ देखेसबमेंबन्धुये
कृष्णयुद्धकेदाय ॥ मोमुखसूखतजातहैअंग
अंगशिथिलाय २८ रोमहर्षहिरदयमें
औरकम्पबहुभाय ॥ धनुषगिरतमोहाथते
त्वचातपतअधिकाय २९ ठाढ़ोह्वैहौंनहिंस
कत भ्रमतजुमोमनमीत ॥ केशवशकुननदे
खिये कैसोहैयहरीत ३० सुनतहतौंसंग्राम

में तातेहरिइमिजान ॥ अपनोभलोमदेखि
यत है बिपरीतसुजान ३१ बिजयनचाहों
कृष्णजू नहिंचाहौंसुखराज ॥ राजभोग
गोबिंदजी अरुजीवहिंकिहिकाज ३२ राज
भोगसुखकृष्णजू करियतइनकेकाज॥ ल
रतजीवधनछांड़िये हमनहिंचाहतराज ३३
गुरुमामा सुतससुरजन सारेनातीदेख ॥
येमारैंमोकोयदपि हौंनहिंहनोंबिशेष ३४
राजतजौंतिहु लोककोकितीइतीयहभूमि ॥
सुतनहनौं धृतराष्ट्रके कितसुखरहिहै झू
मि ३५ पापहोइइनकेहने यदपिलियेह
थियार ॥ ताते ये हनियेनहीं बंधुसहित
निरधार ३६ कृष्णसुजनकोमारिकै सुख
लहियेकाभाइ ॥ येजुभुलायेलोभसों नहि

देखैंयादाइ ३७ जोपैयेदेखैंनहीं लोभकरहिं
वेचेत ॥ कुलक्षयमित्रद्रोहको सबअघकेजु
निकेत ३८ क्योंनकहौंयापापते हमहिंनि
वारनकाज ॥ दोषजुकुलक्षयकरतहूं देखैंश्री
यदुराज ३९ कुलक्षयभयेतेधर्मकुल जातजु
सबैनशाइ ॥ धर्मनशहिकुलको तबहिंहोत
अधर्मसुभाइ ४० कृष्णअधर्महिंकेबढ़ेदुखी
होहिं कुलनारि ॥ होहिंवरणशंकरतबहिं
तियहिदोषनिरधारि ४१ नरकपरै शंकर
भयेकुलघातीजेलोइ ॥ गिरहिंपितरतिनस
बनके पिंडदेइनहिंकोइ ४२ कुलहिंचरण
शंकरभये डारतदोषबढ़ाइ ॥ जातधर्मकुल
धर्मजे तेऊदेतनशाइ ४३ कुलधर्मनकेन
शतही निसंदेहयहहोय ॥ सदानरकमें ते

रहैं यहजुकहतसबकोय ४४ बड़ेपापके क
रनकोनिश्चयकियोबिचार ॥ चितमेंआन्यो
राजसुख हनतकुटुंबनिरधार ४५ शस्त्रपा
णिबिनमोहिंजोपकरिलेहिंहथियार॥ धार्त
राष्ट्रमोकोहरैं सोमोहिं है सुखसार ४६ ॥
संजयउवाच ॥ ऐसेकहिअर्जुनतबहिं बैठिगयो
रथ माह ॥ करतेडारेशरधनुषशोकबढ्यो
नरनाह ४७ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मबिद्यायां
योगशास्त्रेश्रीकृष्णअर्जुनसंबादेअर्जुनबि
षादोनामप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

संजयउवाच ॥ लै उसांस अँखियांभरैं अ
र्जुनकरुणाभाइ ॥ बहुबिषादसंयुक्तलखिबो
लेश्रीयदुराइ १ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ अर्जुन

यासंग्राममेंकतदुखपायोमीत ॥ कीरतिअरु
स्वर्गहिहरैंकायरज्योंभयभीत २ कायरता
तजिनकरै यहतोकोनहिंयोग ॥ छांड़िकचा
ईजीयकी गहिशस्त्रनकोभोग ३ ॥ अर्जुनउ-
वाच ॥दुहुसेनामेंकृष्णजाहिंभीषमअरुद्रोन॥
पूजोकैशरसोंहनों मोसोंकहिये सोन ४
भीखमांगिबरुखाइये गुरुहनिबो जोअनी
ति ॥ गुरुहिमारिभोगहिकरौं भषोंसुलोहू
रीति ५ यहैजुहमनहिंजानहीं हारिहोयकै
जीत ॥ जिन्हैंमारिहम नहिजियें तेगाढ़हैं
मीत ६ धर्ममांझमैंमूढ़हों पूछतकृपणासु
भाय ॥ दीनतुम्हारीशिरणाहौं दीजैयुक्ति
बताय ७ ॥ संजयउवाच ॥ ऐसेकहिश्रीकृ
ष्णसे अर्जुनताहीबार ॥ युद्धनहौंहरिजू

करौं कीन्होंयहनिरधार ८ भूमिलोकसुर
लोकको लहौंअकंटकराज ॥ इन्द्रियसों
खतजीवकोजाइनशोकसमाज ६ दोऊसे
नामांझयों अर्जुनकियोबिषाद ॥ कृपावंत
श्रीकृष्णजू कीन्होबचनप्रसाद १० ॥श्रीभग
वानउबाच ॥ शोचअशोची क्योंकरत कहत
ज्ञानकीबात ॥ शोचनपण्डितकरतहैं जी-
वनउपजतजात ११ हमतुमअरुनरपतिजिते
इनकोनाशनहोइ ॥ तिहूंकालमेंथिररहैं
यादेहीमेंदोइ १२ देहीकेजिमिदेहमेंकुमा
रादिजसहोय॥ तैसेदेहीनरलहै मोहतधीर
नसोय १३ अर्जुनइन्द्रीचित्तमिलि विषय
जुदुखसुखदेत ॥ शीतउष्णांर्नाहिंथिररहै स
हितिनकोतूहेत १४ जाकेब्यथानहोइकछु

सुखदुखगिनैसमान ॥ बड़ेघरैमुक्तिहिलहै
बातयहैपरमान १५ जोहैसोबिनशैनहींजो
बिनशैसोनाहिं ॥ जोइनतत्वनकोलखै
गनियेज्ञानीमाहिं १६ जासोंपगयहहैभर्यो
सोअबिनाशीजान ॥ जाहिबिनाशनकोसकै
ताहिआतमामान १७ अंतबस्तुसबदेहहैंजो
वरहतहैंनित्त ॥. अबिनाशीयहबस्तुहै युद्ध
करैंकिनमित्त १८ जोयाकोहंतागनै हन्यो
गनतजोकोय ॥ यहनमरैमारैनहीं अज्ञानी
वेदोय १९ यहनमरैउपजैनहींभयोनआगे
होइ ॥ अजरपुरातननित्यहै मारेमरैनसोइ
२० जोजानतहैआतमाअजअबिनाशीनित्त।
सोनरमारैकौनको ताहिहनैकोमित्त २१
जैसेपटजीरनतजैपहिरतनरजुनबीन॥देह

पुरानीजीवतजिनइँगहतपरबीन २२ यह
नकटैहथियारसोंपावकसकैनजारि॥ भीजि
सकैजलनाहिनेसोखिसकैनबयारि २३ क
टैजरैसूखैनहीं औरनभीजनयोग ॥ नित्य
रहैसबठौरथिर अबिनाशीबिनरोग २४
प्रकटतनहींअचिन्त्यहैअबिकारीतूजान ॥
ऐसेयाकोजानिकैशोकलहैजिनमान २५ जो
तूजानतजीवको जनममरनपुनिहोइ ॥ त
नकशोकतूजिनकरैमनदृढ़तामेंजोइ २६ जो
उपजैसोबिनशिहैमरैसोउपजैआइ ॥ होन
हारसोहोतहैतहांनशोचबढ़ाइ २७ पाछेजा
इनजानिये आगेपरेनजान ॥ मांझहियेकु
छदेखिये ताकोशोचनमान २८ जोयाको
देखैकहै सोऊअचरजभाय ॥ सुनैअचम्भव

सोंलगे यह जानो नहिं जाय २९ जीवन मा-
र्यो जात है बसत सबनि की देह ॥ तासों शोच
न कीजिये करि काहू सों नेह ३० अपनो ध
र्म बिचार तू जनि छांड़ो संग्राम ॥ धर्मयुद्ध ते
क्षत्रय ह औरन कछु अभिराम ३१ अपनी
इच्छा तें लह्यो खुल्यो स्वर्ग को द्वार ॥ भागवंत
क्षत्री लहैं ऐसो रन या बार ३२ और धर्म
संग्राम को जो तू करिहै नाहिं ॥ तजि कीरति
निज धर्म अरु परिहै पापन माहिं ३३ सबै
लोक कहिहैं अबहिं तेरो अयश बढ़ाइ ॥ अय
श प्रतिष्ठावन्त को मरन हु ते अधिकाइ ३४ भ
य ते अर्जुन रन तज्यो योंकहिहैं ये बीर ॥ तो हिं
बहुत करमान ते अब लघु ह्वै हो धीर ३५ तेरे
अरि सब कहैंगे जे अनकहनी बात ॥ निज

घाटासुनिपाइकैबहुदुखलागततात ३६ ल
रतमरैलहिहैस्वरग जीतेपुहुमीभोग ॥ उठि
अर्जुनतूयुद्धकर निश्चयतोकोयोग ३७ला
भहानिअरुदुःखसुखजीत्योहारसमान ॥ ता
तेअर्जुनयुद्धकर पापलेहिजनिमान ३८सां
ख्यबुद्धितोसोंकही कहतयोगबिधितोहिं॥
ताबुधिकेसंयोगसेरहैनकर्मनिमोहिं ३९
कर्मकरैबिनकामनाताकोहोइननाश ॥ अ
ल्पकियेहूधर्मतिनकाटतभवभयफांश ४०
बुद्धिजुनिश्चयवंतकोएकैहैतूजान ॥ जिन
केनिश्चयनाहिनेतिनहोंबहुबिधिमान ४१
जेनहिंमानतस्वर्गफल तेअज्ञानीलोइ ॥ क
हतजुह्योंकछुऔरहीतिनमेंज्ञाननहोइ ४२
स्वर्गलाभकोकामना रहितजुतिनकेचित्त ॥

भोगबड़ाईकेलिये करतक्रियासौंहित्त ४३
भोगबड़ाईकामना तिनकेचितहरिलेत॥ नि
श्चयकरतेबुद्धिको नहिंसमाधिमेंदेत ४४
त्रिगुणकर्मसेकहतहैंवेदसुतूजिहिमित्त॥ धी
रजधरिदुखसुखहिसहि योगक्षेमतजिचित्त
४५ सरितासागरकूपसोंसरतजुएकैकाज॥
तैसेजानेब्रह्मको लहैवेदकोसाज ४६ तो
अधिकारजुकर्मसों नाहिंफलनसोंहेत॥ क
र्मनकेफलछांड़िदे करिसुकृतहिमेंचेत ४७
योगस्थितह्वैकर्मकरि सबैसंगजोत्याग॥
सिद्धिअसिद्धिसमानगनि यहैयोगअनुराग
४८बुद्धियोगसोंकर्मकोअर्जुनतूघटिजानि॥
शरणहोहिंतूबुद्धिकीदीनकामनामानि ४९
बुद्धियुक्तदोऊतजैकहापुण्यकहापाप॥ बुद्धि

कर्म में चतुरईसोईकरितूआप ५० चाहतन
हिं जेकर्म फल तेपंडितबड़भाग ॥ जन्मवंध
कोछांड़िकै लहैंमुक्तिअनुराग ५१ मोहस
घनताजबतजै अर्जुनतेरीबुद्धि ॥ तबलहिहै
वैरागतूचितमेंकरिकैशुद्धि ५२ तेरीबुधिबै
रागमेंथिररहिहैजबमित्त॥ तबलगमेरेयोग
सेह्वै हैनिश्चलचित्त ५३ ॥ अर्जुनउवाच ॥ जा
कीबुधिनिहचलसदा ताकेचिन्हबताइ ॥ कै
सेबोलतक्योंरहतचलतजुहैकिहिभाइ ५४
श्रीभगवानउवाच ॥ जेहैंमनमेंकामना तिनकोतजै
जुकोइ॥ आतमसोंसंतोषगहिनिहचलबुद्धि
सुहोइ ५५ दुखकोतजिभागैनहींसुखचाहैन
हिंचित्त॥ सहितनेहओक्रोधभयनिहचलबु
द्धिसुमित्त ५६ नेहनकाहूसोंकरैभलेबुरेको

पाय ॥ भलेबुरेसोसुखनदुखसोंथिरबुद्धिक
हाय ५७ जोकछुवानिजअंगकोखैंचिआपमें
लेत॥ तैसेखैंचैंइन्द्रियन तजिबिषयनसोंहेत
५८ बिषयकरतहैंदूरजो सोतजिहैआहार ॥
आतमदेखैजातुहै अभिलाषानिरधार ५९
ज्ञानवंतजेपुरुषहैंयत्नकठिनतासाधि॥इन्द्री
अतिबलवंतहैंतऊलगावतब्याधि ६० ताते
रोंकैइन्द्रियन मोमेंचितकोलाइ ॥ सबमेंक
रिकैयेसबैसोथिरबुद्धिसुभाइ ६१ नरधाव
तहैंबिषयको जातेउपजतसंग ॥ कामजुउप
जतसंगतेतातेक्रोधअभंग ६२ मोहहोतहै
क्रोधतेमोहहोतेबुधिनाश ॥ सुद्धिगयेबुद्धीन
शतबुद्धिगयेमृतपास ६३ रागद्वेषको जो
तजै तजैबिषयकीसेव ॥ इन्द्रीजानिजबश

करैलहैशान्तिकोभेव ६४ शांन्तिजबैयह
गहतहै होतदुखनकीहानि ॥ बुधितबहीं
थिरहोतिहै यहलीजोतुमानि ६५ योग
बिनाबुद्धिहुनहीं बुधिबिनहोइनध्यान ॥
ध्यानबिनासन्तोषनहिं सुखनशांतिबिनजा
न ६६ इन्द्रीजितजितफिरतिहै तितमनला
वतिखैंचि ॥ मनजुबुद्धिहरिलेतहै बायुनाव
ज्योंऐंचि ६७ जिनइन्द्रीरोगीसबै ठौरठौर
तेआनि॥ बिषयत्यागहैजिनकियो थिरबुधि
ताहोमानि ६८ जागतहैंजहँसंयमी जहां
सबनकीराति ॥ जीवसबैजागततहां सोमु
निकोनिशभांति ६९ जैसेजलसबसरितके
मिलतसमुद्रहिजाय ॥ त्योंसमाहींकामना
शान्तरहैंतहँआय ७० तजिकैसबमनकाम

ना जोनरनिषप्रिहहोय॥ अहंकारममतातजै तामेंशान्तिजुहोय ७१ ब्रह्मज्ञानतोसोंकह्यों जातेमोहनशाय ॥ बुधिजोअंतसमयरहैमिलै ब्रह्ममेंजाय ७२ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मबिद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसम्बादे शान्ति योगोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अर्जुनउवाच ॥ बुद्धिभलीहैकर्म्मते कृष्ण कहीतुमजोहि ॥ कर्म्मनिधानमेंजोकहा संशयहोतहैमोहि १ बचनसुनेसन्देहके मो बुधिहैभरमाति ॥ निश्चयकरियाकोकहौ लहौंमुक्तिजाभांति २ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ नेष्ठा जोद्वैभांतिकी पहलेकहीबनाय ॥ कर्म्मश्रे ष्ठहैबुद्धिते यहिबिनयहनशिजाय ३ कर्म्मबि

नाकीयेपुरुष ज्ञानहिंलहैनकोय ॥ कियेबि
नासंन्यासके दोऊमुक्तिनहोय ४ कर्मकिये
बिनक्षणाकहू रहैनकोऊजंत ॥ विवशभये
कर्म्मनकरैं बँधिमायाकेवंत ५ कर्म्मइन्द्रि
यनरोंकिकै मनबिषयनकोध्यान ॥ कपटी
मूरखहैंबड़ोताकोदम्भीजान ६ मनसोंरोंकै
इन्द्रियन कछुकर्म्मनपरचाय ॥ फलअभि
लाषाकोतजै जातेयहअधिकाय ७ अनकरि
वेतेकर्म्मकहि भलोसुतूकरिमित्त ॥ बिनकी
नेतेकर्म्मयह देहनिमितहैनित्त ८ यज्ञकर्म
बिनकर्म्मजे जगबन्धनतेहोत ॥ तिहिकाजे
कर्म्मनिकरै मिटैफलनकोगोत ९ यज्ञसहि
तरचिजगतको पहलेकेहिबिधिबात ॥ उद
यतिहारोजगतमें कामधेनुयहबात १० यज्ञ

निकरिदेवनभजौ देवतुम्हैंफलदेहिं ॥ वृद्धि
परस्परयोंकरो मनबांछितफललेहिं ११
इष्टभोगकोदेतहै देवभजैतेमित्त ॥ बिनपूजे
तेलेतहैं तेहैंचोरंनिचित्त १२ यज्ञशेषजेखा
तहैं पापनडारतधोय ॥ यज्ञबिनाजेखातहैं
अघनितलहतहैंसोय १३ जीवअन्नतेहोतहै
अन्नमेहतेहोय ॥ मेहयज्ञतेहोतहै यज्ञकर्म्म
तेंजोय १४ कर्म्मजुउपजतवेदते वेदब्रह्मते
नाम ॥ ब्रह्मजोभाषासबनिमें ताहियज्ञकरि
जान १५ वेदबनायेकर्म्मजे वर्णनकरतजे
कोय ॥ पापइन्द्रियनबशभये जन्मरहतहैं
खोय १६ आतमसोंसन्तुष्टजेआतमसोंरति
होय ॥ त्रिपतजुआतमसोंरहै ताहिनकरनो
कोय १७ जाहिकरैंजेपुनिनहीं बिनकीये

नहिंहोय ॥ ब्रह्मादिकसोंकामनहिं आतम
हींसोंमोय १८ फलकामनकोछांड़िकै कर्म
करौतुमनित्त ॥ संगबिनाकर्म्मनकरै मुक्ति
लहैनरमित्त १९ लहीसिद्धिसनकादिहू
कीन्हेकर्म्मसमाज ॥ लोकरीतिजोदेखियै
तुमहूकरौसुकाज २० बड़ेजुआचारहि
करैं सोईमानेआन ॥ ताहीमगसबजगचलै
बड़ेकरहिंजुप्रमान २१ मोंकोकछुकरनो
नहीं तिहूंलोकमेंकाज ॥ नकछुलहौंलहबो
नकछु कर्म्मकरतयहसाज २२ जुहौंकर्म्म
बिनहींकरोंरहौंआलसीमीत ॥ तौहूसबनर
हूगहैंमेरेमगकीरीति २३ जोहौंकर्म्मनि
नहिंकरों होइसबनकोनाश ॥ प्रगटाऊंशंक
रतबै हनहुंप्रजायाआस २४ मूरखजोकर्म

निकरै करिबहुप्रीतिसुभाय ॥ लोककाज
ज्ञानीकरै मनतासोंनलगाय २५ तिनकी
बुधिभेदनतजै रहैकर्म्मलपटाय ॥ सावधा
नज्ञानीरहै पेखेतेइन्द्राय २६ मायाकेगुण
कर्म्म हैं सबैकर्म्मयहजानि ॥ अहंकारकर
मूढ़जे लेतअपनपोमानि २७ गुणअरुकर्म
बिभागको जानततत्त्वजुकोय ॥ इन्द्रीबिष
यनसोंपगोंआपमगननहिंहोय २८ माया
गुणकरिमूढ़जे रहैंबिषयलवलाय ॥ तासँग
तेज्ञानीतिन्हैं देइनकहूंचलाय २९ चितअ
ध्यातमआनिकै कर्म्मनमोमेंराख ॥ अहंका
रममतातजै युद्धहिकोअभिलाष ३० जेनि
तयामेरेमतहि श्रद्धासोंगहिलेत ॥ तिनको
जियनिष्कर्म्महै कर्म्मतजैंकरिचेत ३१ जे

मेरेयामतहिको करतनदोषलगाय ॥ तेमू
रखजानेनहीं हैंअचेतकेभाय ३२ ज्ञानवंत
हूकरतहैं अपनीप्रकृतिसमान ॥ सबकोऊ
निजप्रकृतिबश रोंकैंतेजुअज्ञान ३३ सब
इन्द्रिनको बिषयमें रागद्वेषजोहोय ॥ ति
नकेबशनरनहिंरहै रहैजुअरिसमजोय ३४
न्यूनहोयजोनिजधरम परतेअधिकोमान ॥
मोचभलीनिजधर्म्ममें परधर्मेंभयजान ३५
अर्जुनउवाच ॥ कहियेप्रेरेकौनके पुरुषकरतहैं
पाप ॥ जाकेइच्छानाहिंने कर्म्मदेतसंताप
३६ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ यहजुकामअरुक्रुद्धहै
रजगुणहींतेहोय ॥ क्योंहूंपूरनहोइनहिं
पापीकोअरिजोय ३७ अग्निढपैजोधूमसे
दर्पणमलकेभाय ॥ गर्भत्वचासोंज्योंढपै ज

गइतनेहीभाय ३८ ज्ञानीहूकोज्ञानइनवैरी
राख्योझांपि ॥ कथदुःसहयहअग्निहैसकैन
कोऊढांपि ३९ इन्द्रीमनअरुबुद्धिहै येही
याकेथान॥ इनकरिकेनाशनजुहै ज्ञानीहूको
ज्ञान ४० अर्जुनतातेप्रथमही तूइन्द्रिनको
रोंकि ॥ हरतज्ञानविज्ञानजो इनपापिनको
ठोंकि ४१ इन्द्रीहैंसबतेपरे तातेपरमन
सोय ॥ मनतेपरेजुबुद्धिहै तातेआतमजोय
४२ आतमलखिबुधितेपरै मनकोकरबश
माह ॥ कामरूपअरिदुसहको मारिडारि
नरनाह ४३ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुनसम्बादेकर्म्म
योगोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

श्रीभगवानउवाच ॥ यहहैयोगहैमैंकह्यो पहि
लेरविसोंजाय ॥ तिनहूंतबमनुसोंकह्योमनु
इक्ष्वाकुसखाय १ परम्परायायोगको जा
नतहैंऋषिराय ॥ बहुतदिनाबीतेगयोसोऊ
योगनशाय २ वहै पुरानोयोगहै तोकोदि
योबताय ॥ यातेतूमोमित्तहै औरभक्तिकेभा
य ३ ॥ अर्जुनउवाच ॥ तुमतौप्रगटेहौअबहिं
सूरपुरातनदेव ॥ तुमकबतासोंहैकह्यो हौं
जानौंयहभेव ४ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ तेरेअरु
मेरेजनम बीतेहैंबहुबार ॥ तूतिनकोजानत
नहीं हौंजानतनिरधार ५ अजअविनाशीप्र
गटहौं जगतईशकरतार ॥ अपनीइच्छालेत
हौंशुद्धतत्त्वअवतार ६ जबअर्जुनजगमेंघटत
परमधर्म्मकोभाय ॥ बढ़तअधर्म्मजहांतहां

तबमैंप्रगटतआय ७ साधनकीरक्षाकरौंपा
पिनडारतमारि ॥थापतरीतिसुधर्मकीयुगयु
गमांझविचार ८ जन्मकर्ममनदि०यहै तत्व
लहैंजोकोय ॥ देहतजैमोकोमिलैवहुरिनज
न्मैसोय ९ रागद्वेष भयकैतजै मोमैराखैभा
य ॥बहुतज्ञानतपकरिगयेमोहींमांझसमाय
१० जोमोकोजैसेभजैहोंतैसेफलदेत ॥ अर्जु
नतेसबजगतमेंमेरोमतगहिलेत ११ कर्म्म
सिद्धिकीचाहकरिपूजतदेवनलोय ॥ कर्मन
कीनरलोकमें सिद्धिवेगतेहोय १२ चारों
बरणजुमैंरचेकरिगुणकर्म्मविभाग॥ होंइन
कोकरतारहूं नहिंमोहूंअनुराग १३ कर्मन
मोकोलिप्तहैं मोहिंनफलकीचाह ॥ जैसेंजो
मोकोभजै कर्मनबांधेताह १४ जोचाहतहैं

मुक्तिको करैंकर्मजोआय ॥ तातेतूभोकर्म
करुपहलेनकोमतपाय १५ कौनअकर्मसुक
र्मको रहतपंडिततोमोहि ॥ मुक्तिकाजसोई
करम कहेदेतहौंतोहिं १६ जान्यौचाहिये
कर्म्मको औरबिकर्मसुभाय ॥ सुनिअकर्म
गतिलीजिये गहौनकर्मकेदाय १७ कर्मन
मांझअकर्मजे लखेअकर्मनिकर्म्म॥बुद्धिवंत
तिनसबकिये मिटेमननकेमर्म १८ जाकेस
बआरंभनिज बिनाकामनाहोत ॥ तासोंपं
डितकहतहैं निजहैंकर्मकेगोत १९ कर्मफ
लनिछांड़ैसदा तृप्तकरैनहिंआस ॥ ताको
कर्म्मनकरतहूंलगैनयमकीफांस २० जीते
इन्द्रियदेहनिजकामपरिग्रहजाहि॥ देहका
जकर्मनिकरै पापनलागैताहि २१ यथाला

असंतोषजो दुखसुखगिनैनदोय ॥ सिद्धि
असिद्धिहिएकसीकर्मनबंधनहोय २२ तजै
सकलजोकामना ज्ञानलगावैचित्त॥यज्ञका
जकर्मनिकरै सोनरबांधियमित्त २३ होम
अग्निहविब्रह्महै अपरैब्रह्महिंजानि॥ जाइ
ब्रह्ममेंसोरहैकर्मसमाधिहिठानि २४ देवन
कोईभजनहै करतपापबहुभाइ ॥एकब्रह्ममें
यजतहै ज्ञानयोगकेदाइ २५ एकजुहोमत
इन्द्रियन संयमआनिस्वरूप॥ विषयिनहो
मतएकहैइन्द्रीअगमअनूप २६ जोसबइन्द्रि
नकेकरम औरकर्मसबपाइ॥ होमतसंयम
अग्निमेंप्रगटकरैचितलाइ २७ एकयजतहै
देवसो एकतपस्यायोग ॥ एकजुपढ़वेहीभ
जैएकज्ञानसोंलोग २८ होमअपानहिप्राण

मैंप्राणअपानहिंमाहिं॥प्राणअपानहिंरोंकि
कैरहतजुहैनरनाहिं २९ प्राननहींमेंप्राणको
होमततजिआहार ॥ येसबजानतयज्ञकोमे
टतसकलबिकार ३० यज्ञशेषअमृतभखत
होमतब्रह्ममेंलीन॥ यहौलोकबिनयज्ञनहिं
परलोकौहैकौन ३१ बहुतभांतिवेदनकहेय
ज्ञसबैयेमान॥ तेसबजानहुकर्मतेलहौमुक्ति
सुखखान ३२ द्रव्ययज्ञतेहैबड़ोज्ञानयज्ञइ
हिंदाइ ।।जितेकर्मबेदनकहेज्ञानहिंरहेसमा
इ ३३ कीजैबहुतेनम्रताप्रश्नरुसेवाभांति ॥
तुहिज्ञानीउपदेशहैं ज्ञानजिनैहैशांति ३४
अर्जुनतूयाकेलहे नहिंलहिहैफिरमोह॥ सब
जीवनकोदेखिहैआपमांझकेसोह ३५ सब
पापनतेजोबड़ोपापीहूतेहोइ ॥ ज्ञानवानच

ढ़िउतरिहैं पापसिंधुसमजोइ ३६ जैसेऽवाल
हुतासकी डारैसबहीजारि ॥ ज्ञानअग्नित्यों
प्रबलहैपरतिकर्म निर्वारि ३७ ज्ञानसमानहुं
लोकमेंपावननाहींऔर॥योगसाधनाजेकरैं
लहैंज्ञानकोठौर ३८ इंद्रीजितशरधासहित
पावैऐसोज्ञान ॥ तापायेतूतुरतहीलहैजुशां
तिसुजान ३९ जोमूरखश्राद्धबिनाताहीको
जुबिनाश ॥ जाकेयहसंदेहहैसोसुखलोक
निराश ४० मोकोअरपैकर्मकरिकरिसंदेहै
दूर। ज्ञानीबंधैनकर्मसोरहैसदासुखपूर ४१
संदेहजुअज्ञानतेउपज्यौअर्जुनआहि ।ज्ञान
खड्गसबछीनकरियोगकरौकिनताहि ४२
इतिश्रीभगवद्गीतायोगशास्त्रेश्रीकृष्णअर्जुनसं
बादेज्ञानयोगोनामचतुर्थोध्यायः ४ ॥

अर्जुनउवाच ॥ कबहुंकहतसंन्यासको क
बहुंकर्मकोयोग॥ निश्चयकरिएकैकहौजामें
सुखसंयोग १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ कर्मयोग
संन्यासअरुयेदोऊशुभदैन॥कर्मयोगसंन्या
समें कर्मनिलहिचितचैन २ द्वैषतजैचाहै
तजै सोसंन्यासीजान ॥ रागद्वैषतेजेरहित
ताहछुट्योतूमान ३ योगसांख्यकोद्वैकहै
मूरखपण्डितनाहि ॥ दोउनमेंएकैभजैदोऊ
फलहैंताहि ४ ठौरजुलहियेसांख्यते सोई
योगतेहोइ ॥ सांख्ययोगएकैगनै ताकोज्ञा
नीजोइ ५ लहैसन्यासहिदुःखसों बिनकर्म
शिरेमित्त ॥ योगयुगतिजेकरतहैं लहैंमुक्ति
निश्चिंत६ इंद्रियजितहैंसुधिहिये योगयुक्ति
जाकोइ ॥ जीवनजानैआतमा।कर्मलिप्तसुन

होय ७ ज्ञानीकर्मनिकरतहू लेइकियेनहिं
मान ॥ सूंघतदेखतछुटतपुनि सुनतचलत
हूजान ८ सोवतजागतचलतअरु बोलत
डारेहुदेत ॥इन्द्रियबिषयनसोंपगी जानतहैं
यहहेत ९ कर्मकरैतजिसंगको सबकोब्रह्मै
जान ॥ ताकोपापनलगतहै पद्मपत्रजलमा
न १० देहीमनबुधिइन्द्रियन योगीहैंनिह
संग ॥ कर्मकरतअतिचापसों चित्तशुद्धके
ढंग ११ ज्ञानीहूमुक्तिहिलहै कर्मकरैफल
छांड़ि ॥ मूरखफलकोआशकरि बँधतकाम
नाआंड़ि १२ मनकरकरमनजेतजें ज्ञानी
तिनकोमानि ॥ नवद्वारपुरमेंबसैंलेतसुखन
कीखानि १३ ईश्वरनहिंकरमनकरतनहिं
करमनकरतार ॥ कर्मफलनिहूंनहिंकरत

प्रकृतिकरैबिस्तार १४ सुकृतनकाहूकोग
है औरपापनहिंलेइ ॥ ढाप्योज्ञानविज्ञान
ते मोहनप्रगटनहोइ १५ दूरकियोअज्ञान
जिन हियेज्ञानप्रगटाइ ॥ देखतईशसुरूप
ते ज्ञानसूरकेदाइ १६ जेमनकोअरुबुद्धिको
राखतईश्वरमाह ॥ जन्ममरणतिनकोन
हीं मुक्तिहोइनरनाह १७ बिद्यावंतपुनीत
द्विज गोगजकूकरजान ॥ इनकोज्ञानीसब
लखतभेदलेतनहिंमान १८ समताजिनके
जीयमें तिनजीत्योसंसार ॥ बिनादोषमो
ब्रह्मतेब्रह्मीतेनिरधार १६ सुखपायेहरषैन
सोदुखपायेनरिसाय ॥ राखैथिरनिजबुद्धि
कोब्रह्महिरहैसमाय २० बाहरकेसुखको
तजैहियसेहरषसुजान ॥ ब्रह्मबिषयचित

क्रोधरतहैंअक्षतसुखमान २१ बिषयजिते
संसारके तेहैंदुखकेमूल ॥ उपजतबिनशत
हैंतिन्हैं पण्डितगहैंनभूल २२ कामक्रोध
केबेगको जोसहिसकैसुभाइ ॥ सोयोगी
नितहीरहै थिरसुखमेंलिपटाइ २३ जाके
हियेप्रकाशहै अंतरसुखआराम ॥ वहयोगी
परब्रह्महै लहैब्रह्मकोधाम २४ जोज्ञानी
पापनतजत होतब्रह्ममेंलीन ॥ भेदनतिन
केजीयमें रहतसबनिसोंदीन २५ कामक्रो
धजेरहितहैंबशकीन्हेजिनचित्त ॥ ज्ञानवन्त
तेहैं सदा ब्रह्मचहूंदिशिमित्त २६ तजैबिष
यसंसारके दृष्टिभौंहमधिराखि ॥ प्रानअपा
नहिंसमकरैनासामधिअविलाषि २७जोतै
इन्द्रियबुद्धिमनमुक्तिहिमेंमनदेइ॥इच्छाभ-

यक्रोधहितजै मुक्तिपदारथलेइ २८ तपय
ज्ञनकोभोगता सबलोकनिकोईश ॥ शांति
लहैयोंजानिकै मोकोप्रभुजगदीश २९ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मबिद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुनसंबादेकर्म
योगोनामपंचमोध्यायः ५ ॥

श्रीभगवानुबाच ॥ कर्मफलनिचाहैनहीं
करैकर्मनिहकाम ॥ योगोसंन्यासीवहैपावै
सुखकोधाम १ जाकोसंन्यासीकहैसोतूयो
गीजानि ॥ बिनसंन्यासहियोगनहिंयहैसां
चतूमानि २ योगहिकर्मनिलेतहैं ज्ञानीचि
त्तबिचार ॥ योगलहैशांतिहिगहै बिषयइ
न्द्रियनमार ३ बिषयनसोंअरुकर्मसोंहोइ
प्रीतिजबदूरि ॥ सबसंकलपनकोतजैयोगर

हैतबपूरि ४ निजआतमकोउद्धरत आधो
गमनकरेइ ॥ आतमहींरिपुआपको आतम
हींसुखदेइ ५ आपहिंजान्योआतमा सोई
बंधुसुपाहि ॥ तिनजीत्यो नाहींजबै अरि
ह्वैबरतताहि ६ जिनजीत्योहै आतमा
शांतिलहीबहुज्ञान ॥ शीतउष्णसुखदुखजु
सम अरुअपमानसुमान ७ जानतज्ञानबि
ज्ञानजोअरुइन्द्रियजितहोय ॥ सोनोपाहन
एकसम गनैसुयोगीकोय ८ मित्रउदासी
शत्रुपुनि अरुनिजबन्धुसमान ॥ साधोपा
पीचित्तमें गनैएकउनमान ९ बैठिइकौसे
इकचितो योगीसाधैयोग ॥ एकाकीचाहै
नकछु जोरैनहिंसुखभोग १० ठौरपुनित्त
निहारिकै करिआसनबिस्तार ॥ नहिंऊं

चोनीचोनहीं पदकुशअजनविथार ११
करिबैठैमनकोजुथिरसबइन्द्रिनकोजीति ॥
करिकैआतमशुद्धको योगकरैयारीति १२
कायाशिर अरुग्रीवको राखैएकसमान ॥
नासाअग्रहिदीठिधरि देखैनहिदिशिआन
१३ शान्तिगहैभयकोतजै ब्रह्मचर्य्यव्रतले
य ॥ मोमेंराखैरोंकिमनलहैयोगकेभेय १४
यहिबिधिकरैजुयोगको निजमनकोथिररा
खि ॥ शान्तिलहैमोकोमिलै रहैअमियरस
चाखि १५ योगलहैनहिबहुभषैबिनपायेहू
मित्त ॥ सोवतहूसोवैनहीं असजगजागहु
नित्त १६ युक्तअहारबिहारजो कर्मयुक्ति
पुनिहोय ॥ जागतसोवतजोयुगत सो
डारतदुखधोय १७ जबनिजचित को

रोंकिकै राखैआतममाहिं ॥ तजैसबैजोका-
मना सोयोगीनरनाहिं १८ जैसेदीपस-
मीरबिन रहैज्योतिठहराय ॥ योगीनि-
श्चलचित्तको उपमाहैयाभाय १६ योगी
सेवतयोगको चित्तजहांठहराय ॥ निरख
तआतमकोतहां रहतसदासुखपाय २०
जोसुखइन्द्रियतेपरै बहुतेबुधिगहिलेत ॥
वासुखकोजानैतबै तापाछेहैनेत २१ जापा
येलाभनअधिक औरहानिनरमित्त ॥ थिर
ताकहिडोलैनहीं बहुदुखपायेनित्त २२ दु
खहूकेजोसंगको मानलेतवियोग ॥ निश्चय
करिजोकहिकरै ताकोकहतेयोग २३ धीर
जधरिअरुबधिकरहरै हरैसबत्याग ॥ कछु
वैकरै न कामनाआतमसोंअनुराग २४मन

चंचलजित तित चलै ताको राखै रोंकि ॥ कैसं
यमनिजग्रातमा सजैजुताकोठोंकि २५
जाकेमनमेंशांतहै पायरहतजोकोइ ॥ मगन
जुब्रह्मग्रनंदमें तायोगीकोजोइ २६ जोयो
गोइहिंविधिकरै योगपापकोत्यागि ॥ सह
जैब्रह्महिकेसुखहिं लहैंरहतग्रनुरागि २७
मोहिंलखैसबठौरजो सबकोमोहिंमांहि ॥
मोकोदेखतसोसदा हौंहूंदेखतताहि २८
व्यापकहौंसबजगतमें मोकोसेवतकोइ ॥
कैसेहूंकितहोरहों ताकोमोमेंजोइ २९ सबं
विषेग्रस्थिरजुहैं यहलखिभजैजुमोहिं ३०
सबकोदेखैग्रापसमसुखदुखएकैभाइ ॥ सो
योगीसबतेबड़ोमोमेंरहैसमाइ ३१ ॥ अर्जु-
नउवाच ॥ योगकह्योतुमकृष्णजू मोकोएक

समान ॥ रहैनमोचितचलतही जोतुमकि-
योबखान ३२ मनहैचंचलकृष्णजू बहुक्षो
भकदृढ़जान ॥ ताकोरोंकतपवनसम हैअ
तिकठिनसुजान ३३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
अर्जुनतूसांचीकही मनचंचलनगहाय ॥
योगकियेबैरागसों नीकेपकर्योजाय ३४
जिनपकरोनहिचित्तनिज तापैयोगनहोइ ॥
जिनअपनोमनबशकियोरहतयतनसोंसोइ
३५ ॥ अर्जुनउवाच ॥ जजनऔरश्रद्धासहित
योगभ्रष्टतापाइ ॥ लहैनसिधिसंयोगकीको
नगतिहिकोजाइ ३६ किधौंदुहूनकेभ्रष्टते
बादरलोंबिनशाइ ॥ ताकोकछूनआसरोर
ह्योमूढ़केभाइ ३७ मेरेयासंदेहकोदूरिकरौ
जगदीश ॥ काढ़नहारसँदेहयहतुमबिनऔ

रनईश ३८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अर्जुन दोऊ
लोकमें ताकोहोइननाश ॥ भलेकमजेकरत
हैं तिनकोनहिंअघबास ३९ पुण्यवंतकेलो
कलहि रहैबहुतदिनजाइ ॥ योगभ्रष्टधनवं
तअरुशुचिघरजन्मैआइ ४० बुद्धिवंतयोगी
कुलनि आइलेइअवतार ॥ जन्मलहतऐसे
घरन दुर्लभहै निरधार ४१ तिनहूंपहली
देहको लहौंबुद्धिसंयोग ॥ यतनकरतहैंसि
द्धिको बहुविधिसाधैंयोग ४२ सोतोअपने
बश नहीं हैपहिलेअभ्यास ॥ तातेउपजैयो
गजोब्रह्मशब्दमेंबास ४३ योगीजोजनन
हिकरैसबअघडारेधोय ॥ बहुतयतनसिद्धै
लहै ताहिपरमगतिहोय ४४ तपसीते यो
गीअधिक ज्ञानीहूंतेजानि ॥ कर्मनिहूंतेहै

अधिक अर्जुनयोगनिठानि ४५ जोयोगी
राखैमनहिं सोमैंनिहचलभाय ॥ श्रद्धायुत
मोकोभजै सोसबतेअधिकाय ४६ कर्मज्ञान
ब्रतयोगते भक्तिसबनिशिरमौर ॥ तिनअ
र्जुनमैंबशकियोमोबिनक्तिननहिंऔर ४७॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मबिद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुनसंबादेआतम
संयमनोनामषष्टोऽध्यायः ६ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ मेरोहीकरिआसरो
मोहींमेंचितराखि ॥ जानहिंनिस्सन्देहयह
मोहित्योंसबसुनिभाखि १ ज्ञानोऔरबि
ज्ञानहौं तोसोंकहौंबखान ॥ जाकेजानेजान

बो कछु न रहतहैंजान २ यतनकरतहैंसि
द्धिकोएकहजारनमाहिं ॥ तिनहूंमेंकोऊल
खै बहुतलखैंमुहिंनाहिं ३ भूमिनीरपावक
पवनअंबरमनबुधिमान ॥ अहंकारहैंआठ
बों मायाभेदनजान ४ अपराइनतेंऔरयह
पराप्रकृतिममजान ॥ जीवतत्त्वजिहिजग
धरेउयहअर्जुनमनमान ५ मायामेरीएकय
ह जिनजुगह्योसंसार ॥ सांचीमनमेंमानि
लें जीवरूपनिजधार ६ मायातेउत्पन्नहैं
सबैजीवहोदाय ॥ हौंउपजाऊं सबजगत
नाशकरौंजुसुभाय ७ अर्जुनमोतेजोपरेऔ
रकछूजिनजान ॥ येसबमोमेंयोंरहौंज्योंसूत
हिंमणिमान ८ रसजलमेंशशिसूरमेंकिरनि
सुमोकोमानि ॥ श्रुतिमेंप्रणवमनुष्यमेंपौरु

षसमधुनिजानि ९ पुनिसुगन्धहौंभूमिमें
हौंपावकमैंतेजु ॥ जीवनहूंकोजीवहूंतपसि
नतपलखिलेजु १० सबजीवनकोबीजहूंमो
कोजानहुंलेहु ॥ बुद्धिवन्तमेंबुद्धिहौं सबतेज
नकोगेहु ११ बलबलवन्तनकोजु हौंकाम
रागतिननाहिं ॥ कामरूपहोंहींजुहौंधर्म्म
सबैमोमाहिं १२ राजसतामससत्वकोजे
हैंसिगरेभाइ ॥ यहसबमोमेंबसतहैंमोहि
नइनसोंचाइ १३ तीनोंगुणकेभावते जिन
मोह्योसंसार ॥ मोकोकोईनहिंलखतअव्य
यइनतेपार १४ मेरीमायागुणमयी दुस्तर
तरीनजाइ ॥ पावैजोकोउमोशरण सोजुतरै
सुखभाइ १५ पापीमूरखतोबड़े तेनहिंपाव
तमोहि ॥ ज्ञानजुमायातेहर्योअसुरगणनि

मेंपोहि १६ पुण्यवंतजेचारिबिधिमोहिभजैं
चितऐन ॥ ज्ञानीरोगीकामयुतविज्ञानीसुन
बैन १७ज्ञानीजोभक्तिहिकरै सोसबतेअधि
काइ ॥ ज्ञानीकोबल्लभजुहै ज्ञानीमोहि
सोहाइ १८मेरेमतयेसबबड़े ज्ञानीमोकोजा
नि ॥ उत्तमगतिपाईजुतिनफलहिलेतनहिं
मानि १९ बहुजन्मनिमोकोलहै ज्ञानवन्त
रेमित्त ॥ बासुदेवसबमेंलखै सोदुर्लभहैनि
त्त २० नहींज्ञानजिनकेहिये सेवतऔरेदे
व ॥ अपनेकामस्वभावसों बध्योजुताहीभे
व २१ श्रद्धायुततेपूजहींजादेवनचितचाइ॥
ताकोताहीमांझहौं श्रद्धादेहुँबढ़ाइ २२ सो
वाहीश्रद्धासहित पूजतवाहीदेव ॥ देतजुहौं
हींकामना वहजानतनहिंभेव २३ फलथो

रोपावतजुवैबिनाज्ञानहैमूढ़ ॥ देवभक्तिदेव
नमिलैमेरोमोकोगूढ़ २४ जिनकीथोरीबु
द्धिहै जानतप्रगटनमोहि ॥ अविनाशीउत्त
मजुहौंसबतेन्यारोजोहि २५ ढप्योजुमाया
योगहौंकाहूकेनप्रकाश ॥ मूरखमोहिनजा
नहीं अजरअमरसुखबास २६ वेजीतेजान
तनहींबर्त्तमानहूमित्त ॥होनहारसबकोलखै
मोहिंलखैनहिंचित्त २७ रागद्वैषअज्ञानसे
सबैजुमोहितहोत ॥ मनजुलेतहैआपको ह
महैंसुखनिउदोत २८ पुण्यकरजेजगतमें
दूरिकरैंनिजपाप ॥ तेईछूटतमोहतेमोको
पावतआप २९ जरामरणकी हानिको जो
कोउकरतउपाय ॥ जाननतेअध्यातमहि
ब्रह्मकर्मकेभाय ३० अधिदैवतअधिभूतसो

मोसोंसेवतनित्त ॥ अन्तसमयभूलै नहींयो
गोमेरोचित्त ३१ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रेश्रीकृष्णअर्जुनसम्बादेप्रकृतिबि
भागयोगोनामसप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥

अर्जुनउवाच ॥ अध्यातमतोब्रह्मको कर्म
कहाजगदीश ॥ अधिदैवतअधिभूततुम जा
नतबिश्वेबीस १ अधियज्ञहिकासों कहत
यादेहीमेंकौन ॥ कैसेतुमकोजानहींप्राणक
रतजबगौन २ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अक्षरसों
ब्रह्महिकहत अध्यातमजुसुभाइ ॥ जेउप
जावतजगतको सोईकर्मसुदाइ ३ देहजु
हैअधिभूतयहअधिदैवतहैजीव ॥ सबदेहन
कीदेहमें होअधयज्ञसपीव ४ अंतसमय

मोहिंशुद्धकरि तनत्यागैजोकोइ ॥ सोवत
हीमोकोमिलै तहांनसंशय होय ५ प्राण
तबैदेहैतजै सुमिरैंजोजोकाज ॥ पारथशोच
तभावजे सोसोपावतसाज ६ मेरोसुमिरन
नित्यकर युद्धकरैकिनमित्त ॥ अपैं मोमेंब
द्धिमन हौंआऊंतबचित्त ७ योगऔरअ
भ्यासमें जाकोचितथिरहोय ॥ मोचिन्ता
राखैसदा पुरुषेंपावैसोय ८ सबकरतासूक्ष
मजुअति कविसुपुरातनमान ॥ रविसमान
सबतोपरैं सुमिरनताकोज्ञान ९ मरनसम
यमनथिरकरै भक्तियोगवलपाय ॥ भृकुटि
मध्यप्रानैधरै परमपुरुषमेंजाय १० अक्षर
जासोंकहतहैं बीतरागजहँजात ॥ ब्रह्मचर्य
कौनेकरै तापदकीयहबात ११ सबद्वारन

कोबशकरै मनरोंकैहियमाहि ॥ प्राणहि
राखैशीशमें रहैधारनागाहि १२ प्रणवा
क्षरकोजपकरै सुमिरैमोकोनित्त ॥ यहिवि
धिजोदेहैतजै लहैपरमगतिमित्त १३ स्थिर
चितह्वैमोभजै सदानिरंतरहोइ ॥ तायोगी
कोसुलभहै औरलहैनहिंकोइ १४ महापु
रुषसिद्धिहिलहै मोकोपायप्रबीन ॥ दुख
कोघरजोजन्महै तामेंहोतनदीन १५ ब्रह्म
लोकलोंलोकजे तिनतेफिरनजुलोइ॥ अर्जुन
मोकोपाइकै जन्मलहैनहिंकोइ १६ सहस
युगनिकेअन्तमें ब्रह्माकोदिनजानि ॥ राति
हुइतनीहोतिहै ज्ञानीकहैबखानि १७ ब्रह्मा
केदिनहोतही प्रगटनयहसंसार ॥ निशिके
आयेजातहैं मायामेंतावार १८ बारबारउ

पजतसबै जीवनसबरेमित्त ॥ ब्रह्माकेदिन
रनिमें बहेजातहैंनित्त १९ ब्रह्मजुमायाते
परे इन्द्रिनगहोनजात ॥ सबजीवनकेनशत
हूं सोकबहूंननसात २० सोई अक्षरपरम
गति ताहिनदेखैकोइ ॥ फिरैनताकोपाइकै
परमधाममम जोइ २१ भक्तिकियेतेपाइहैं
परमपुरुषकोजान ॥ जामेंसगरेजीवयेजग
बिस्तारोआन २२ फिर आवतजाकालमें
नहिंआवतताकाल ॥ अर्जुनतोसोंकहतहौं
सुनयहसीखबिशाल २३ अग्निज्योति
दिनशुक्लपट उतरायनकेमास ॥ जातजुज्ञा
नीयासमय लहैब्रह्ममेंबास २४ धूमनिशा
दक्षिणअयन कृष्णपक्षजोहोय ॥ शशिमं
डलयोगीलहै फिरआवतहैसोय २५ शुक्ल

कृष्णयेगतिकही तेसंसारहिहोत ॥ फिरआ
वतहैएकगति एकलहतहैजोत २६ जोजानै
दोऊगतिनि योगीमोहनहोय ॥ योगीहैअ
र्जुनमुहूं सबकालनिमेंजोय २७ वेदयज्ञ
तपदानको फलजुहोतहैमित्त ॥ योगीताफ
लकोलहै सशारहेनिहिचित्त २८ सबफल
कोफलसारफल योगोहरिसोंयोग ॥ भक्ति
करैमोकोमिलै फलत्यागेकरिभोग २९ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मबिद्या
यांयोगशास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुनसंबादेमहा
पुरुषयोगोनामअष्टमोध्यायः ८ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ अर्जुनतोसों कहतहौं ए
कगुप्तयहबात ॥ समझैज्ञानबिज्ञानकोलहै

मुक्तिकोघात १ उत्तमबिद्याराजहै अतिप
वित्रतूजान ॥ फलताकोप्रत्यक्षहै करिवोहू
सुखमान २ करिबेकोयाधर्मके जाकेश्रद्धा
नाहिं ॥ तेमोकोपावतनहीं डोलतहैंभवमा
हिं ३ बिस्तारयोजबजगतमें मोहिंनदेखै
कोइ ॥ सबैजीवमोमेंबसैं मोहनतामेंजोइ ४
मोमेंकोऊनहिंबसै यहईश्वरतादेखि ॥ उप
जावतपाईमतजु नहिंतिनमें अवरेखि ५
जैसेपवनअकाशमें फिरतरहैसबबार ॥त्यों
मोमेंयहजीवसब फिरतज्ञाननिरधार ६ मे
रीमायामेंरहै प्रलयभयेसबजन्त ॥ अलप
आदिसिरज्यौंतिन्हैंमोमेंतिनकोतन्त ७ अ
पनीमायालेहुहौं सिरजितबारम्बार ॥ मा
याहीकेबशपरयो रहैसदासंसार ८ अर्जुन

मोकोकर्मयहककबहूंबांधतनाहिं ॥ सद्यउदा
सीरहतहौं आशक्तनतिनमाहिं ६ हौंप्रेरत
मयहीजबै उपजतसबसंसार ॥ पारथयाही
हेततें फिरतसुबारंबार १० मोकोमानस
जानिकैआदरकरैनकोइ ॥ मूरखयहजानत
नहीं इहैजुईश्वरहोइ ११ नरतनुआश्रित
जानिमोहिं करतअवज्ञामूढ़ ॥ जानेनहींप्र
भावमम सबकोईश्वरगूढ़ १२ उनकीआ
शासुफलनहि ज्ञानकर्मताधाइ ॥ प्रकृति
आसुरीराक्षसी तामेंबूड़ेधाइ १३ देवप्रकृ
तिमेंजोमिलैं कामक्रोधकोत्यागि ॥ तेमोको
पावतसबै रहतजुहैअनुरागि १४ मिलजु
महात्मासुरप्रकृति पारथजानिमोहिधन्य ॥
अव्यय सब भूतादि नित भजत जुमनसान

न्य १५ नितकीर्त्तनमेरोकरै यतननमोब्रतरा
खिभक्तिसहितमोकोनवतमेरेहीगुणभाखि
१६ ज्ञानयज्ञकोऊभजत मोकोसेवतमीत॥
कोऊमानतएककरि कोऊबहुतपुनीत १७
हौंहींकृतअरुयज्ञहौं स्वधाऔषधीजानि ॥
हौंपावकअसहोमहौं मंत्रोंमोकोमानि १८
मातापिताजुजगतको हौंहींहौंकरतार ॥
ऋक्यजुसामपवित्रहौं औरवेदउोंकार १६
गतिनिवासभर्त्ताशरन साक्षीप्रभुअरुबंध ॥
उत्पतिप्रलयस्थाननिधि अव्ययबीजअबंध
२० तपतगहतत्यागतजुहौं बरषतमोहीं
जान ॥ अमृतकारनकरनहौं हौंहींअर्जुन
मान २१ यज्ञकरतपापनदहन चाहतस्व
र्गहिबास ॥ इन्द्रलोकलहिभोगवें दिब्य

भोगसबिलास २२ फिरआवतभूलोकमें
क्षीणपुण्यजबहोय ॥ आवागवननेकरतहौं
कामवंतजेलोय २३ भक्तिकरैजुअनन्यह्वै
मोहींमेंचितराखि ॥ योगक्षयतिनकोकरै
निजजनकोअभिलाषि २४ औरदेवकेभक्त
जे सेवतश्रद्धावंत ॥ बिधिछोड़ैमोकोभज
त लहतनमेरोतन्त २५ सबयज्ञनकोभोग
ता औरसबनकोईश ॥ जेममसत्यनजानहीं
डारततिनकोधीश २६ देवभक्तिदेवनलहैं
पित्रपजिपिंतथान ॥ भूतभजैभूतादिलहैं
मोपूजैंभगवान २७ पातफूलफलनीरको
जोअपैंकरिप्रीति॥ लेउँदयाहोंभक्तकोदेखि
प्रीतिकीरीति २८ जोकछुकरतजोअशन
है जोहोमतजोदेत ॥ अर्जुनजोतूतपकरै

मोहिंदेइकरिहेत २९ भलेबुरेजेकर्म हैं ति
नतेछूटहिमित्त ॥ भक्तियोगसंन्यासकरिमो
हिं लहोइनचित्त ३० हौंसबठौरसमानहौं
मेरेप्रीतिनद्रोह ॥ मोकोसेवतभक्तिजे तिन
सौंमोसौंमोह ३१ दुराचारमोकोभजै ह्वै
अनन्यकेभाय ॥ ताकोतुमसाधौगनो शुभ
निश्चयकेदाय ३२ बेगहोइधरसातमाशां
तिलहैबहुभाय॥ अर्जुननिश्चयजानतू नहिं
मोभक्तिनमाइ ३३ अर्जुनसेवत मोहिंजे
पापयोनिहूंहोय ॥ त्रियाशूद्र अरुवैश्यपुनि
लहैंपरमगतिसोय ३४ द्विजपुनीतअरुभ
क्तिबर राजारिपुवहभाय ॥ सुखअनंतया
लोकको मोहिंभजैचितलाय ३५ मोकोभ
जतूनम्रह्वै मोहींमेंमनराखि ॥ यहीयुक्ति

तूमोहिंमिल प्रेमनिसोंअभिलाषि ३६ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मबिद्यायां योगशास्त्रेश्रीकृष्णअर्जुनसम्बादेराजबिद्या राजगुप्तयोगोनामनवमोध्यायः ॥ ६ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ दुरीबात तोसोंकहत सुनअर्जुनचितलाय ॥ ह्वैप्रसन्नतोसोंकहौं तेरेहितकेभाय १ देवोऋषिजानतनहीं मो उत्पतिहूमीत ॥ देवऋषिनकीआदिहोंनि तहीरहतपुनीत २ अजअनादिजगदीशनि तमोकोलखतजुकोइ ॥ सबमेंज्ञानीवहबड़ो पापनिडारतधोइ ३ बुद्धिज्ञानसमदमक्षमा अव्याकुलताहोय ॥ सुखभवदुःखअभावभ वऔरअभयहूजोय ४ तोषअहिंसादानतप समयशअयशोजान ॥ जीवनकोसबभाव

यहमोतेहोतसुमान ५ सातोंऋषिअरुचा
रिमुनि मोमनतेजुउदोत ॥ सबलोकनि
मेंहौंभरेतेइनहींकेगोत ६ मेरेयोगबिभूति
कोतत्त्वजानजोलेत ॥ निहचलजागहिसो
लहै रहतजुयाहीहेत ७ जगकोकर्त्ताईश
हों मोहोंतेसबहोइ ॥ ज्ञानवंतयहजानिकै
मोहींसेवतसोइ ८ प्राणचित्तमोमेंधरै बो
धपरस्परदेत ॥ मेरेचरितनि कहतनित
मानितोपसुखलेत ९ सेवतमोकोतेसद
भक्तियोगकेभाइ ॥ भलीबुद्धिवेलहतहैंरह
तजुमोमेंआइ १० सोअज्ञानहिदूरकरि
दयावंतवहोत ॥ करतजुतिनकेहियमेंज्ञान
दीपउद्योत ११ ॥ अर्जुनउवाच ॥ परब्रह्मप
वित्रतुम परमानँदकोधाम ॥ अविनाशी

अजपुरुषहौ आदिदेव तवनाम १२ सब
ऋषिइहिबिधिकहतहैं नारददेवलजान ॥
ब्यासस्तुतितुमहूंकहत तातेलीनेमान १३
जोकछुतुममोसोंकहत मानतहौंसतभाइ ॥
दानवदेवनजानहौं तुमप्रगटनकेदाइ १४
आपुनपौआपुनलखौ तुमपुरुषोत्तमदेव ॥
जीवन उपजावतहरत पालतदेव निदेव
१५ निजविभूतिमोसोंकहौ दिब्यजुचित
कोचाइ ॥ जोबिभूतिश्रीकृष्णजूरहीजगत
मेंछाइ १६ ध्यानतिहारोकरतप्रभु जानै
कैसेतोहिं ॥ कौनपदारथमेंलखौं सोसमु
झावोमोहिं १७ योगबिभूतिसोआपनी
कहियेमोसोंदेव ॥ मोकोतृप्तिनहोतहै सु
नतअमियरसभेव १८ ॥ श्रीभगवनुवाच ॥

अर्जुनतोसोंकहतहौं निजबिभूतिबिस्तार॥
मुखजेतीतेईकहत एकै दृगननिहारि १९
सबजीवनकेहियेमें मोंहिंआतमाजानि ॥
आदिअंतअरुमध्यमें मोहींसबमेंमानि२०
आदित्यनमेंबिष्णुहौंज्योतिनमेंरविदेखि॥
बायुनमांझमरीचहौं नक्षत्रनमेंशशिलेखि
२१सामदेवहौंवेदमें इन्द्रअमरगणमाह ॥
सर्बजीवमेंचेतना मनइन्द्रिनकोमाह २२
रुद्रनिमेंशंकरजुहौं यक्षनमांझधनेश ॥
पावकहौंहौंसबनमें शैलसुमेरसुदेश २३
देवपुरोहितमुख्यजो मोहिंवृहस्पतिमा
नि ॥ षटमुखसेनापतिनमें सरमेंसागर
जानि २४ होंजुमहर्षिनमांहिभृगु बाणी
मेंओंकार ॥ यज्ञनमेंजपयज्ञहौं थावरहिम

आधार २५ वृक्षनमेंपीपरजुहौं ऋषिनमें
नारददेव ॥ गंधर्वनमेंचित्ररथ सिद्धिकपि
लमोभेव २६ अश्वनमेंउच्चैश्रवा ऐरावत
गजमाह ॥ पोषतसबकेकामहोंनरमें हौं
नरनाह २७ हथियारनमेंबज्रहौं कामधेनु
हौंगाइ ॥ कामप्रजाकरमाहहौंबासुकिसर्प
नराइ २८ नागनमांझअनंतहौंबरुणजुहौं
जलजंत ॥ पितरनमेंहौंअर्यमायमहौंसंय
नवंत २९ दैत्यनमेंप्रहलादहौं प्रेरनहा
रोकाल ॥ सिंहजुहौंसबमृगनमेंपक्षिनमें
रिपुब्याल ३० उत्तालनमें पवनहौं शस्त्र
धरनमेंराम ॥ जलजंतुनमेंमगरहौं नदिय
नगंगानाम ३१ अध्यातमविद्यानमें वाद
बिषादनमाह ॥ आदिअंतमेंमध्यहौं सबै

सृष्टिकोनाह ३२ अक्षरमांझअकारहौं
द्वन्दसमासनजानि ॥ हौंहींअक्षयकालहौं
धातामोकोमानि ३३ हौंसबकोसंहरतहौं
औरउपावनहार॥ श्रीकीरतिसरसतुक्षमा
होहिंबुद्धिसंभार ३४ महासामहौंसाममें
गायत्रीमधिछंद ॥ मार्गशीर्षहौंमासमेंऋतु
बसंतसुखकन्द ३५ जूआहौंसबछलनमेंतेज
स्विनमेंतेजु॥ जयअरुउद्यमसत्तहौंसतसत
वंतनकेजु ३६ यदुकुलमाहींकृष्णहौंअर्जुन
पांडवमाहि ॥ मुनिनमांझहौंव्यासमुनि
गनौंशुक्रकविताहि ३७ दंडवंतमेंदंडहौं
जीतवंतमेंजीत ॥ ज्ञाननहू मेंज्ञानशुभ नौ
नदुरावनरीत ३८ औषधिमेंजवअन्नमें
कंचनधातुनमाह ॥ सर्वत्रणनमेंदर्भहौं यौं

समझोनरनाह ३९ सबजीवनको जीवहौं
अर्जुनमोकोजानि ॥ थिरचरयासंसारमेंमो
बिनकछू न मान ४० मेरीदिव्यविभूति
कोअंतनजानोजाय ॥ यहतोथोरोसोकह्यो
मैंबिभूतिकोभाय ४१ जोकछुयासंसारमें
कतहूगुणअधिकाय ॥ सोसबमेरो तेजहै
दीनोंतोहिंबताय४२ बहुतकहातोसोंकहौं
अर्जुनबातबनाय ॥ सबजगअपनेअंगसों
मैंराख्योंठहराय ४३

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुनसंवादेबिभूति
योगोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अर्जुनउवाच ॥ मोहींपरकीनीदया अध्या
तमप्रकटाय ॥ बचनतुम्हारोसुनतही मोह

जुगयोनशाय १ जीवनकीउतपतिसुनी
औरप्रलयकीरीति ॥ कहीजुतमबिस्तार
सोंआतमकीशुभनीति २ योंहींहैजोतुम
कहतहरिजूअपनोभेव ॥ देखोचाहतहोंअबै
रूपतुम्हारोदेव ३ देखनयोगोंमोहिंजो
जानतहौंयदुराय ॥ अबिनाशी निजरूप
तुम दीजैमोहिंदिखाय ४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
अर्जुनअबतू देखिले सतसहस्रमोरूप ॥
बहुत भांतिहैदिब्यजो नानाबरणअनूप ५
देखिरुद्र आदित्यवसु अश्विनिसुतमोमा
हिं॥औरोंअचरजरूपजेपहिलेदेखेनाहिं ६
एकठौरमोदेहमें थिरचररहेसमाइ ॥ देखो
चाहतजोकछुसोईदेउँदिखाइ ७ इननयनन
नहिंदेखिहौ देउंदिब्यदृगतोहिं ॥ ईश्वरयो

गसयुक्ततूजैसेदेखैमोहिं ८ ॥ संजयउवाच ॥
योगेश्वरश्रीकृष्णजूकहिबचननबहुभाइ ॥
परमरूपईश्वरजुहौ सोदीनोंप्रगटाइ ९ ब
हुआननलोचनबहुतदेखेअचरजहोत ॥ शो
भितनानाभूषणनि शशिअनेकउद्योत १०
दिब्यहार दिब्यैबसनदिब्यसुगंधलगाइ ॥
आनिरूपतुम होतिते शोभितनानाभाइ ॥
११ सहसकिरणआकाशमें पूरिरह्योसो
ज्योति ॥ दीपनताप्रभुकीलहै तऊनसम
ताहोति १२ भिन्नभेदहैजगतमें देखैसब
इकठौर ॥ देवदेवकीदेहमें अर्जुनदेखैऔर
१३ ताकोतब अचरजभयो रोमहर्षके
दाइ ॥ तादेवहिपरणामकरि बोल्योचितके
चाइ १४ ॥ अर्जुनउवाच ॥ देखतहौंतुमदेह

में सबसुरथिरचरसिद्ध ॥ कमलासनशुभ
ईशपुनिसर्बनागशुभवृद्ध १५ बहुतबाहु
उदराबहुत मैंदेखेबहुशीश ॥ अंतआदिम
ध्ययहनहीं ऐसेतुमजगदीश १६ मुकुटशी
शकरचक्र गद रूपराशिभगवान ॥ दृगन
चौंधचितवन लगेहौरविअनलसमान १७
अक्षरहौतुमहौपरम हौसबजगतनिधान ॥
अबिनाशीरक्षकसबनि उत्तमहौउनमान
१८आदिअंतमध्यरहततुम रविशशिहैंतव
नयन ॥ तेरेमुखदीपतिअगिनिसबहीकोतु
अयन १९ गगनभूमिमध्यसर्वदिशव्यापै
तुमइकहैजु ॥ अद्भुतरूपजुउग्रलखि प्रवि
शतलोकसबैजु २० पैठततोमेंदेवसब स्तु
तिकरभयमानि ॥ ऋषिअरुसिद्धमहातमा

नवतसुतोकोजानि २१ रुद्ररूपरविविश्व
कहुअश्विनिसुतअरुबायु ॥ सिद्धयक्षगंधर्व
सुरदेखतअचरजपायु २२ रूपबड़ोबहुमु
खनथनभुजपदबहुउदरौजु ॥ देखिभयान
कदाढ़बहुबिथकतलोकअरुहौंजु २३ पाय
पुहुंमिआकाशशिर हगमुखदीरधबाय ॥
ऐसेतुमकोदेखिकै धीरजगयोपराय २४
कालअग्निसबदाढ़तुम तादेखतभयभीत॥
दिशभूली सुखहूंगयो अबकीजै बहुप्रीत
२५ पतसबैधृतराष्ट्रके सबनृपतिनकेसंग॥
कर्णद्रोणभीषमजितेयोधाहैंतोअंग २६ प्रे
रतेरेबदनमेंसबैपरतहैंजाय ॥ कोऊदाढ़न
तरदले कोऊरहैलपटाय २७ ज्योंसरिता
बरषाऋतै परतसिंधुमेंजाइ ॥ त्यौंनृपतेरे

बदनमें सबैपरतहैंधाइ २८ ज्यौंपतंगपर
दीपमेंलहैंअपनपोनाश ॥ तैसेसबनृपरहत
हैं तेरेमुखकेपाश २९ लीलतहोतिनकोजु
ले रसनासोंलपटाय ॥ कान्तिरावरीजगत
कोदेततापबहुभाय ३० उग्ररूपतुमकौन
हौ मोसोंकहियेदेव ॥ जानोचाहतहौंअबै
तुमबातनकोभेव ३१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ का
लरूपहैहौंबढ्यो सबकोमारणहार ॥ तोबिन
सबयोधानको भषिजैहौंनिरधार ३२ ताते
उठिरणजीतिअबबलकोरतअरुराज ॥ मैंह
निराखैहैंनृपति येसबतेरेकाज ३३ भीषम
द्रोणजयद्रथकरनआदिजेऔर ॥ भयतजिअ
र्जुनयुद्धकर अरिनमारियाठौर ३४ ॥ संजय
उवाच ॥ बचनसुनेश्रीकृष्णके कांपीअर्जुन

देह ॥ पुनिपुनिप्रभुपगलगिसुडरि बोलो
बचनसुयेह ३५ ॥ अर्जुनउवाच॥ सबजगको
यहिजगतमेंतुमसेहैअनुराग।।सिद्धनवतता
कोसदा राक्षसजातजुभाग ३६ क्योंननवों
तुमकोजुहौं ब्रह्माकेकरतार ॥ जगतईश
अक्षरअनंतसबकाहूतेपार ३७ पुरुषपुरा
तनआदिहो तुमहींजगतनिधान ॥ तुमयह
सबजग बिस्तर्यो जानततुमहींज्ञान ३८
बायुप्रजापतिअग्नियमबरुणचंद्रतवरूप ॥
बारंबारसहस्रशतप्रणमिततुम्हेंअनूप ३९
आगेतेहोतेनवत पाछेहूंजुअनन्त ॥ सर्वदि
शनतुमकोनवत अमितप्रबलभगवन्त ४०
मित्रजानि तोसोंकही सोक्षमियेहोदेव ॥
जानोंकहाजुबापुरो तुममहिमाकोभेव ४१

भोजनसमयबिहारमें कियेअनादरभाइ ॥
तेजुक्षमासबकीजिये प्रभुजीकेसबराइ ४२
पिताजुतुमसंसारके तुमहींगुरुहोईश ॥ तु
मपटतरकोउनाहिनै कौनकरैतोरीश ४३
तुमहिंदगडवतप्रसन्नह्वै क्षमहुदोषजोमो
हि ॥ ज्योंपतिसुतकोपतित्रियहि मित्रमि
त्रकोजोहि ४४ रूपलख्योयहरावरोमोहिं
हर्षभयहोय ॥ पहिलोरूपदिखाइये हौं
जीवतजेहिजोय ४५ मुकुटबिराजतशीश
पर शंखचक्रगदहाथ ॥ इहिबिधिमोहिंदि
खाइये प्रभुहोतुमजगनाथ ४६ चारिभुजा
धरिप्रकटह्वै मोकोदरशनदेहु ॥ तुवमूर
तिजुअनंतहैमोकोजासोंनेहु ४७ ॥ श्रीभगवा
नुवाच ॥ तोहिंदिखायोरूपमैं अतिप्रसन्न

चितहोइ ॥ आदिअन्तसुतेजमय देखिसकै
नहिंकोइ ४८ वेदयज्ञअरुतपकिये और
कियेहूदान ॥ ऐसेमेरेरूपको तोबिनलखै
नआन ४९ रूपभयानकदेखिकैतुजिनजि
यहिडराय ॥ अबभयकोतूदूरिकरि मेरेरू
पहिचाय ५० ॥ संजयउवाच ॥ अर्जुनसोंऐसे
कहीपहलोवपुप्रकटाय ॥ समाधानबहु बि
धिकियो भयतेलियोबचाय ५१ ॥ अर्जुन
उवाच ॥ रूपअनूपजतुमधर्यो तारूपैहौंदे
खि ॥ प्रकृतिलहीमैंआपनीभयोसचेतबि
शेखि ५२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ देख्योपरसन
रूपयहदुर्लभदरशसुमित्त ॥ तास्वरूपको
देवतादेख्योचाहतनित्त ५३दानयज्ञतपबि
धिकियेमोहिंनदेखैकोइ ॥ बिनश्रमपारथ

तूअबै मोकोरह्योजुजोइ ५४ भक्तिअनन्य
जुकोउकरै सोदेखैयाभाइ ॥ नीकैजानैतत्व
सो मोमैंरहैसमाइ ५५ मोनिमित्तकर्मनि
करै सृजैभक्तितजिऔर ॥ बैरनकाहूसोंधरै
मोमैंलहैसुठौर ५६ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मबिद्यायांयोग
शास्त्रेश्रीकृष्णअर्जुनसंबादेरूपदर्शनोनाम
एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अर्जुनउवाच ॥ जेसेवततुमकोसदा करि
कर्मनकेसाज ॥ अक्षरब्रह्महिंजेभजतबड़ो
कौनकहिराज १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ जोमो
मैंमनराखिकै सेवतसेवकभाय ॥ बहुश्रद्धा
सोंजोजुगति सोसबतेअधिकाइ २ जोधा
वतहैअक्षरहि जोनहिंप्रकटस्वरूप ॥ ब्या

पीमायातेपरे अजरअचिंत्यअनूप ३ सब
इन्द्रिनकोरोकिकैलखतजोसबहिसमान ॥
सबजीवनकोहितकरत मोहिंमिलैकरज्ञान
४ तिनकलेशबहुहोतहैब्रह्मलगायोचित्त ॥
रूपरेखजाकेनसो दुखसोलहियेमित्त ५ जे
सबकरमनकरतहैं अर्पतमोकोजानि ॥ ध्या
वतकेवलभक्तिसों बहुउपासनाठानि ६ मृ
त्युसहितभवउदधितेताकोकरतउधार॥ मो
मेंचितराख्योउननिबहुभाइननिरधार ७ ता
तेअर्जुनबुद्धिमन मोहीमेंतूराखि॥ याआगेमो
देहमेंबासिहैतूअभिलाखि ८ जोतूमोमेंनहिं
सकै चितअपनोठहराय ॥ करअभ्यासमो
मिलनको मोहिंनिरंतरधाय ९ जोअभ्या
सनकरिसकै कर्मसमर्पहुमोहिं ॥ मेरेकर्मन

करतहू सिद्धिहोयगीतोहिं १० यहौनजोतू
करिसकैमोपरनहिंअनुराग ॥ सबैकर्मकेफ
लनकोअर्जुनकरतूत्याग ११ ज्ञानभलोअ
भ्यासतेतातेध्यानबिशेष ॥ फलत्यागोताते
भलोतातेसांतहिलेष १२ द्वेषनकाहूसोंक
रैमित्रभावकरजानु ॥ अहंकारममतातजै
सुखदुखक्षमासमानु १३ सदारहैसन्तोष
सोंमनराखैनिजहाथ ॥ प्राणबुद्धिमोमेंधरै
वहप्यारोमोसाथ १४ वहकाहूतेनहिंडरै
भयओरहिनहिंदेइ ॥ हर्षक्रोधदोऊतजैसो
मोकोंहरिलेइ १५ चाहनकाहूकीकरैरहैपु
नीतउदास ॥ सबआरम्भनकोतजैरहैसुमेरे
पास १६ प्रियपायेआनन्दनहिंअप्रियल
हैनद्वेष ॥ शोचकछूनाहींकरैतजशुभअशु

भविशेष १७ शत्रु मित्रकोसमलखैसबैमा
नअपमान ॥ शीतउष्णदुखसुखतजैसंगक
रैनहिंआन १८ अस्तुतिनिन्दाएकसीग
हैमौनसन्तोष ॥ घरनकरैथिरमतरहैलहै
मुक्तिकाओष १९ धर्म्मअमृततोसोंकह्यों
ताहिजुसुनुसबकोइ ॥ श्रद्धाजितमेरोभग
तमाहिंसुप्यारोहोइ २० योगयज्ञव्रततप
सबैकीन्हैंएकसमान ॥ सरससारफलसब
निकोमेरीभक्तिप्रधान २१ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसम्बादेमुक्तियोगो
नामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अर्जुनउवाच ॥ प्रकृतिकौनऔरपुरुषकोको
क्षेत्रज्ञकहाजु ॥ यहजाननकोलालसाज्ञान

ज्ञेयपुनिकाजु १॥ श्रीभगवानुवाच ॥ छत्रकहत
यहदेहसोंअर्जुनज्ञानीलोइ ॥ जानतजोया
देहकोसोक्षेत्रज्ञसुहोइ २ सोममरूपजुआ
त्माबसतसबनकीदेह ॥ सोहैज्ञानकोजानके
मेरोमहहैएह ३ क्षेत्रजहांतेहोंभयोजोहैजैसे
भाइ ॥ जोबिकारयेमांझहै कहोसंक्षेपसुना
इ ४ ऋषिनकहोबहुभांतिजोअरुछंदनहूभा
षि ॥ हेतवादिनिश्चयजुकरि कह्योउपनि
षदसाषि ५ महाभूतअहंकारबुधिअरुमाया
हूजानि ॥ एकादशइन्द्रीबिषै पंचअगोचर
मानि ६ इच्छासुखदुखचेतना द्वैषधीरतादे
ह ॥ यहजोकहोसंक्षेपसों क्षेत्रजानितूलेह ७
क्षमासरलतादम्भबिनु हिंसामदअभिमा
न ॥ गुरुसेवासयंमकरनथिरताशौचप्रधान

८ विषयनसोंवैरागधरि तजेरहैंअहंकार ॥
जन्ममृत्युदुखसुखजरा ब्याधिदोषनिरधार
९ नेहनपुत्रकलत्रसों तादुखदुखीनहोय ॥
चितमेंधरैंसमानता भलेबुरेकोखोय १० अ
टलभक्तिमोमेंधरैंसबमेंआतमजान ॥ रहैस
दाएकांतमेंतजैंसभासनमान ११ अध्यातम
ज्ञानैधरैतत्वज्ञानकोदेखि ॥ यहसबजोकछु
मैंकह्यों यहैज्ञानअवरेखि १२ कह्योअमृत
समजानिबो जातेमुक्तिजुहोय ॥ कारणकार
यतेपरे आदिब्रह्मकोजोय १३ सर्बत्रहिकर
चरणशिर त्योंहींमुखदृगकान ॥ ब्यापिर
ह्योसबजगतमें मोहिंदशोदिशजान १४ स
बबिषयनतेहैंरहित शुभतनकोअभ्यास ॥
संगबिना सबकोधरत गुणातीत परकास

१५ जन्तुजितेचरहूअचर अन्तरबाहरसोइ
सबतेदूरिसुनिकटहैसूक्ष्मलखैनहिंकोइ१६
तामेंभेदकछूनहीं सबमेंरहतबिभाग ॥ उप
जावतनाशतसबनि पालतकरअनुराग १७
ज्योतिनहूंकीज्योतिहैअंधकारतेपार॥ त्याग
जानिबोजीयमें सबकैहैनिरधार १८ छेत्र
ज्ञानअरुज्ञेयमें तोकोदयोबताइ ॥ इनको
जानैजोभगति लहैसुमेरोभाइ १९ मयापु
रुषअनादिहै अर्जुनदोऊजानि ॥ गुणबिका
रजेसबभये मयाहीतेमानि २० कारनकार
यकरतऊ मयाइनकोहेत ॥ दुखअरुसुखके
भोगको वहैपुरुषगहिलेत २१ पुरुषप्रकृ
तिमेंपैठिकै करतबिषयकोभोग ॥ ऊंचेनीचे
जन्मकोकारणगुणसंयोग२२ परमातमको

देहते न्यारोजानतलोइ ॥ साक्षीभर्त्ताभोग
ताईश्वरनिर्गुणहोइ २३ जोकोऊऐसेलखै
प्रकृतिपुरुषगुणभाइ ॥ सोकयोंहूंजगमेंरहै
बहुरिनउपजैआइ २४ देहमांझआतमलखै
कोऊकियेस्थान ॥ सांख्ययोगअरुकर्मकर
लखैऔरसज्ञान २५ जैसेसोनहिंजानही
तेसुनऔरनपैजु ॥ ममउपासनाकरतहै भ
वभयमृत्युतरैजु २६ जितेजीवयाजगतमें
थावरजंगमहोत ॥ क्षेत्रऔरक्षेत्रज्ञतेतेसबल
हतउद्योत २७ परमेश्वरसबजन्तुमें बैठ्यो
एकसमान ॥ तिनहिंसत्यबिनसैनहीं जो
जानैसोजान २८ ईश्वरकोसबठौरजो जा
नतसमताभाय ॥ आतमहीसोंहोइनहिं रहै
परमगतिपाय २६ मायाकरतजोकर्मसब

जीवअकर्ताजोइ ॥ जानतजोयाभेदको ल
खतआतमासोइ ३० एकआत्मामेंस्थित
सबप्राणानकोभाव ॥ आतमहीसोंबिस्तरै
लखैसुब्रह्मैपाव ३१ आदिअन्तनिरगुण
परम अव्ययसोईहोय ॥ देहमांझयद्यपि
रहै करैसुलिप्तनहोय ३२ जोप्रकाशसबमें
बसै सूक्षमपरसतनाह ॥ त्योंहींयहपरमा
तमा लिप्तनदेहनमाह ३३ ज्योंप्रकाशएकै
करै सबजगसूरजदेव ॥ त्योंहींसबकीदेहमें
परमातमकोभेव ३४ क्षेत्रऔरक्षेत्रज्ञको
भेदलखैजोकोइ ॥ जीवप्रकृतिअरुमोक्षको
जानैमुक्तिनहोइ ३५ ॥

इतिश्रीभगवद्गीता श्रीकृष्णार्जुनसम्वादेक्षेत्र
क्षेत्रज्ञनिर्देशोनामत्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

श्रीभगवानुवाच ॥ परमजोउत्तमज्ञानसो
तोकोंकह्योबताय ॥ जाहिजानिबेमुनिसबै
रहैंमुक्तिकोपाय १ याहीज्ञानहिसोइकै मे
रोलहौंस्वरूप ॥ प्रलयबिथातिनकोनहीं
परैंनतेभवकूप २ ब्रह्मप्रकृतिमेंयोनिहै ता
मेंगर्भहिराखि ॥ उपजावतसबसृष्टिहौं अ
र्जुनचितअभिलाखि ३ जेजेमूरतहोतहैंसब
योनिनमेंआय॥ तिनकोहौंहींबीजहो हौंही
पितुअरुमाय ४ सतरजतमयेगुणभये माया
हीतेंजानि ॥ देहमांझयाजीवको येहीबाधत
आनि ५ निर्मलऔरप्रकाशकरसतगुणशां
न्तिसुभाइ॥ज्ञानसंगसुखसंगकर बांधतजी
वहिंआइ ६ रजगुणरागस्वरूपहैतृष्णासंग
कोहेत ॥ कर्मसंगकरिजीवकोऐसेबंधनदे

त७ होतजुतमअज्ञानतेमोहतसबकोहोय ॥
आलसनिद्राबिकलताइनसोंबांधतजोय ८
सत्वमगुणसुखमेंबढ़त कर्मरजोगुणहोय ॥
आलसमेंतमगुणबढ़ै रहतज्ञानसबखोय ६
रजगुणतमगुणपेलिकै रहैसात्वगुणपूरि ॥
रजसबकोपेलैजुतम सततेरजतमदूरि १०
सबद्वारनमेंदेहके जबहिंप्रकाशतज्ञान ॥
तबहिंबढ़ोहैसत्वगुण अर्जुनतूयहजान ११
बढ़तरजोगुणहैजबहिं नरशरीरमेंआय ॥
लोभकरमउद्यमअरुन इन्हेंदेइप्रकटाय १२
अर्जुनतबहींकरतहै तमगुणआइप्रकाश ॥
अलसमोह अज्ञानतावमनमें करतबिलाश
१३ जोसतगुणकीबुद्धिमें तजैजीवनिजदे
ह ॥ तौज्ञानीकेलोकमें जायकरैमोगेह १४

राजसमेंतजिप्राणकोजाकर्मवन्तघरजाइ ॥
तमगुणमेंजेभरनहैं पशुनमांझप्रगटाइ १५
सुकृतकर्मजेहोतहैं सात्विकफलअनिमक्ष॥
रजगुणकोफलदुःखहै तमअज्ञानफलतुक्ष
१६ लोभरजोगुणसोंभयो सतगुणतेहैज्ञा
न ॥ तमगुणतेहैबिकलता मोहऔरअज्ञा
न १७ सात्विककंचनतूहै राजसमध्यम
लोक ॥ तामसजानअधोगती पावतवहुबि
धिशोक १८ गुणहीकोकरतारकर जानै
ज्ञानीकोइ ॥ मोहिलखैगुणतेपरे मोमैंली
नसुहोइ १९ देहकरतजेतीनगुण तिनको
देहजुत्याग ॥ जन्ममृत्युदुखतेछुटै रहैमुक्ति
मेंपाग २० ॥ अर्जुनउवाच ॥जिनमाहींनहिं
तीनगुण तिनकेलक्षणकौन ॥ कैसेताको

आचरण प्रभुमोसोंसुकहौन २१ ॥श्रीभगवानु
वाच ॥ मोहज्ञानअसकर्मको जोजानेहिय
माहिं ॥ बिनपायेचाहैनहीं वहदुखपावैना
हिं २२ उदासीनबैठ्योरहै दुखसुखचपल
नहोइ ॥ गुणसबकारजकरतहै योंजानैजो
लोइ २३ दुखसुखकोसमकरगनै कंचन
माटीभाय ॥ प्रियअप्रियकोतुल्यगिन स्तु
तिनिंदाइकदाय २४ तुल्यमानअपमान
अरु शत्रु मित्रइकजानि ॥ सबआरंभनको
तजै गुणातीतकहितानि २५ मोकोंजोदृढ़
भक्तिसों सेवैचितकेचाइ ॥ सोतीनोंगुणते
परे रहैब्रह्मकोपाइ २६ अर्जुनहौंहींब्रह्महों
मुक्तोमेरोरूप ॥ होंअबिनाशीहोंधरम आ
नँदपरमअनूप २७ आनँदकोहौंधामहौं धा

नोभूतहोंतेजु ॥ मोकोसोईबशकरै नित्तहि
भक्तिकहेजु २८॥

इतिश्रीभगवद्‌गीतासूपनिषत्सुब्रह्मबिद्यायां
योगशास्त्रेश्रीकृष्णअर्जुनसम्बादेगुणयो
गनामचतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

श्रीभगवानुवाच ॥ ऊरधजरशाखातरै अबि
नाशीअस्वस्थ॥ वेदपत्रजोजानहीं सोजानै
सबअर्थ १ गुणसोंचैशाखाबढ़ी बिषयापल्ल
वभाय ॥ जरफैलीकर्मनबँधी मनुजलोकमें
आय २ आदिअनंतहिजानिये थानरूपनहिं
जाहि ॥ दृढ़असंगहथियारलै दुसहमूलत
रुढाहि ३ चाहकरैजाठौरकी फिरैनजाकोपा
इ ॥सृष्टिभईजापुरुषतेताकीशरणजुआइ ४

धामलोक प्रभुतनद्युतिसु ब्रह्महिकहकैञ्च
र्थ ॥ झांपिकर्मदृढ़सुनमहा बैकुंठहिसाम
र्थ ५ कामसंगअरुमोहतजि अध्यातमरत
होइ ॥ सुखदुखतजिताकोलहै अबिनाशी
जोकोइ ६ पावकरबिअरुचन्द्रमा तहांनक
रैंप्रकाश ॥ फिरैनताकोपाइकै सोहैमेरोबा
स ७ जीवलोकमेंअंशमम अबिनाशीमोरू
प ॥ मनहिंआदिइन्द्रीनको औरप्रकृतिको
भूप ८ जाशरीरकोतजतहै जुहोकरतसन-
बन्ध ॥ इन्द्रीईश्वरसँगरहै चाइसंगज्योंग
न्ध ६ श्रवणनयनअरुनासिका त्वचअरुर
सनामानि ॥ इनकोगहिमनसंगलै लहत
जीवबिषपानि १० इन्द्रीयुतनिकसंगरहत
करतबिषयकोभोग ॥ मूढ़जीवकोऊनहींल

खैसुज्ञानीलोग ११ योगेश्वरयतननिकि
ये देखतहैंहियमाहिं ॥ मूरखयतननकरत
हूजोवहिदेखैनाहिं १२ धारतहौंसबजगत
को करपुहुमीपरवेश ॥ पोषतहौंसबऔष
धी ह्वैरसशशिमगभेष १३ तेजजुहैआदित्य
में भाषतसबसंसार ॥ चन्द्रमांझअरुअग्नि
में सोमेरोनिरधार १४ हौंहींजठराअग्नि
हू सबदेहनमेंआय ॥ प्राणअपानसहाइसो
डारतअन्नपचाय १५ सबकेहियमेंहौंरहौं
मोतेज्ञानविचार ॥ वेदसबैमोकोकहैं मैंति
नकोकरतार १६ लोकमांझद्वै पुरुषहैं क्षर
अरुअक्षरभाइ ॥ क्षरशरीरसोंकहतहैंअक्षर
जीवगनाइ १७ उत्तमपुरुषजोऔरहैपरमा
तमकेबेश ॥ तीनलोकजोधरतहै करिकैनि

जपरवेश १८ क्षरऔअक्षरतेपरे होंसबते
अधिकाउं ॥ यातेवेदरुलोकमें पुरुषोत्तम
मोनाउं १९ जोकोउमोकोनहिंभजत तेमू
रखतुमानि ॥ अर्जुनजेमोकोंभजत तेईजा
नसुजान २० छिपीबातग्रंथनिजुही सोतो
सोकहिदीन ॥ पारथजेजानतयहै तेईबुद्धि
प्रवीन २१ ॥

इतिश्रीभगवत्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुनसंबादेपुरूषोत्तम
योगोनामपंचदशोऽध्यायः ॥१५ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ अभयसत्वहियसाधता
ज्ञानयोगथिरहोय॥ ज्ञानयज्ञतपवेदरुचिध
रमसरलताजोइ १ अननिसाअरुसत्यमैंर

हैक्रोधबिनमित्त ॥ दानशान्तिबहुबिधिरहै
दोषनआनैचित्त २ दयाकरैसबजंतुपरतजि
चपलाईभाय ॥ लाजअकर्मनतेसुमृदुअर्थ
क्रियाकुटिजाय ३ तेजक्षमाशुचिधीर्ययुतत
जैद्रोहअभिमान ॥ देवसंपदाजिनलहीतामें
गुणयेजान ४ दंभदर्पअज्ञानरिसअरुअभि
मानकुठौर ॥ तामेंयेगुणजिनलहीअसुरसंप
दाघोर ५ देवसंपदातेमुकतबंधुआसुरीजो
हि ॥ शोचैजनिअर्जुनभई देवसंपदातोहि
६ देवआसुरीभेदतेद्वै बिधिसृष्टिहैवेह ॥ पहि
लेकहिबिस्तारसोंअबदूजीसुनलेह ७ अवि
धऔरबिधिजगतकी आसुरीजानतनाह ॥
सत्यशोचआचारनहिं येगुणहैंतिनमाह ८
श्रुतिपुराणईश्वरहिजेमानतनाहींमूढ़ ॥ मै

थुनतेसंसारयहकामक्रोधहियगूढ़ ६ यहमैं
पायोंहैअबै लहौंमनोरथऔर ॥ यहधनमे
रेगेहमें जारोंहैंवहठौर १० अल्पबुद्धिहैन
ष्टजे यहैदृष्टिगहिलेत ॥ हिंसायुतकर्मनि
करैरिपुयुगकुपकेहेत ११ करताबिनमान
तजगत अथिरअसतसोजानि ॥ उपजतहै
तियपुरुषते ताकेहितकोमानि १२ गहिकै
ऐसीदृष्टिको नष्टचित्तजोबुद्धि ॥ होतउग्रक
र्मानुते जगतसहितबिनशुद्धि १३ भजत
अयस्वजकाम कोदंभमानमदपाइ ॥ गहत
बुराईमोहते मासऔरमदखाइ १४ जाको
कछुपरमाननहिं ताचिंतामेंलीन ॥ कामभो
गहैअतिभलो निश्चयमानतहीन १५ ते
आशापांसनबँधे कामक्रोधचितचाह ॥ जो

रतधनअन्यायकरि कामभोगनिर्बाह १६
मनबांछितमेंयहलहों लहैनचाहतयाह ॥
यहधनमेरेहैंजुरौरहैजुऔरउनाह १७ यह
बैरीहैमोहनो करोऔरकोअंत ॥ ईश्वरहौं
भोगीजुहौं सुधीसिद्धभगवंत १८ मैंहींध
नीकुलीनहों औरनमोहिंसमान ॥ पयोदे
हमेंदहिलहौंमोहितयोंअज्ञान १९ उनको
मनअतिभ्रमतहै मोहजालपरनित्त ॥ परत
घोरअतिनर्कमेंकामभोगकेहित्त २० निज
बड़िआई नितकहत नवतनधनअभिमान ॥
नावमात्रयज्ञनभजतदंभीबिनाबिधान २१
अहंकारबलदर्पअरु कामक्रोधगहिलेत ॥
दोषीनिजपरदेहमें मोकोतेदुखदेत २२
मोद्रोहीअरुमरतते पापीअधमनिहारि ॥

जगतआसुरी योनिमेंतिन्हैंदेतहौंडारि २३
जन्मजन्मतेंमूढ़ते होतजुआसुरआय ॥ मो
कोतेपावतनहीं परतअधमगतिजाय २४
नरकद्वारबिधतीनहैं देतआपकोनास ॥ का
मक्रोधअरुलोभपुनिइनछोड़ेसुखबास २५
तीनोंद्वारजुनरकके तिनमेंछुटैजुकोय ॥ प
तनकरैकल्याणको तबहिंपरमगति होय
२६ जेशास्त्रनबिधिछोड़िकै करतक्रियाबश
काम ॥ सिद्धिलहैनहिं परमगति नहिंसुख
मेंबिश्राम २७ तातेकाजअकाजमेंताकोवे
दप्रमान ॥ कर्मनकरितूजानिकै तिनकोबि
धसुबिधान २८ वेदकहतजुपरोक्षह्वैमोको
देतबताय ॥ मेरेईकर्मनिकरै मेरीआज्ञापा
य २९ परमपराहै जनमके श्रद्धा होत

समान ॥ श्रद्धामें यहपुरुषहै श्रद्धाताहि प्रमान ३० ॥

इतिश्रीभगवदगीतासूपनिषत्सुब्रह्मबिद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुनसंबादेवासुरसंबादियोगोनामषोड़शोऽध्यायः ॥१६॥

अर्जुनउवाच ॥ श्रद्धायुतयज्ञहिकरत जे वेदनकीनीति ॥ सतरजतमजेथितकहीक हियेतिनकीरीति १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ श्रद्धानरकीतीनिबिधि होतजुसहजसुभाइ ॥ सात्विकराजसतामसी सुनिये तिनकेदाइ २ परंपराहीजनमते श्रद्धाहोतसमान ॥ श्रद्धामेंयहपुरुषहै श्रद्धाताहिप्रमाण ३ देवनसेवैसात्वकी राजसराक्षसयक्ष ॥ भूतप्रेतगणजेभजेतेनरनामसयक्ष ४ चार

तपस्याजेकरैं जेनवेदमतहोहिं ॥ भरैदंभ
हंकारसेकामरागबलगोहिं ५ पंचभूतजे
देहमेंतिनकोवेदुखदेत ॥ हियमेंमोहूको ह
नत तेहैंअसुरअचेत ६ तीनिभांतिआहार
हिय सबकोरोवतहोइ ॥ यज्ञज्ञानतपभेद
ये सोपैसुनियेसोइ ७ सुंदरथिरअतिचीक
नोसात्विकप्रियआहार॥आयुसत्यअरुअंग
बल प्रीतिबढ़ावनहार ८ दाहकरूखोउष्ण
कटुतीक्षणाषाटेखार ॥ शोगरोगदुखदेतहैं
येराजसआहार ९ जाहिरभेपहरुकभयोवा
सोउठौरिसाय ॥ जूंठौऔरपवित्रनहिं भो
अनतामसखाय१० बिधिबिधानसोंकीजिये
छांड़िफलनकीआस ॥ समाधानधरिहिये
में शात्विकयज्ञबिलास ११ करिकैफलकी

कामना औरदंभकेभाय ॥ ऐसेजो यज्ञहि
करैसोहैराजसभाय १२ बिनअन्नहिबिन
दक्षिणाबिनामंत्रबिधिहीन ॥ बिनश्रद्धा
यज्ञहिकरै सोहैतामसदीन १३ ज्ञानीद्वि
जअरुवेदको पूजैशुचिमृदुहोइ ॥ ब्रह्मचर्य
हिंसातजैतपशरीरकरसोइ १४ भयनकरै
जेप्रियबचनहितकारीसतभाय ॥ करैवेद
अभ्यासपुनिबाचकतपयादाइ १५ मनप्र
सादजुमुखादमृदुइन्द्रीनिग्रहमौन ॥ भाव
शुद्ध योंकहतहै मानसतपसीतौन १६
श्रद्धासोंनरतपकरतसोहैतीनौंभांति ॥फल
इच्छाछांड़ैकरै सोईसात्विककांति १७पूजा
आदरमानको औरदंभकेकाज ॥ सोतपरा
जसकरतहैचंचलछनकसमाज १८ देहै

दुखदेमूढ़क्कै अरुहठसोंतपहोय ॥ परकोक
छदिखावहीतामसतपहैसोय १६ दानदेइ
उपकारबिनुपात्रबिप्रकेदेखि ॥ देशकाल
कोजानिकेसात्विकदानबिशेषि २० कीजै
जोउपकारकोफलकीआशामानि॥ दीजैसो
अतिकष्टसों ताकोराजसजानि २१ बिना
देशअरुकालबिन दीजैनीचहिदान ॥ बिन
आदर अधिकारता तामसजायबखान २२
ओंततूसतूयेब्रह्मकेनामजोतीनप्रकार ॥ बि
प्रबेदअरुयज्ञमुनिकोनेपहिलीबार २३ क्रि
यायज्ञजपदानतपकरिपहिलेओंकार ॥वेद
वंतजेकहतहैं बिधिबिधानबिस्तार २४तत
यहकरिकैकहतहैं क्रियायज्ञतपदान ॥फल
अभिलाषाछांड़िजे चाहतमुक्तिनिदान२५

साधुभावसतभावको सतकोकरतउचार ॥
औरभलेपुनिकरमहैंसतकोगावतसार २६
यज्ञज्ञानतपकीजुतियताहिकहतसुतनाम॥
जाकाजैंयेकर्महैं ताकोसतबिश्राम २७ अ
र्जुनसबयहअसनहैं दुहूंलोकमेंसाज ॥ श्र
द्धाबिनहोमत जपत देत जु सबैअकाज २८
सतरजतमजगदानतपब्रतहैमोहांहेत ॥का
मक्रियाकृतमंत्रसबसिद्धएकहरिहेत २९ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुनसंवादेगुणत्रय
विभागयोगोनामसप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

अर्जुनउवाच ॥ त्यागतत्वजान्यौचहत क
हियेश्रीभगवान ॥तत्वऔरसन्यासकोन्या
रो करौबखान १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ काम

युक्ति कर्मनतजै ताहिनामसंन्यास ॥ कर्म
फलनिकोत्यागयह त्यागकहतसुखरास २
कर्मछांड़ियेदोषलौं कोउकहतयानीत ॥
यज्ञदानतपकर्मजिन तजेऔरयहरीत ३
याठौरहि पारथजुतू मेरोनिश्चयजान ॥
तीनिभांतिकोत्यागयहअर्जुनचितमेंआन ४
यज्ञदानतपकर्मयह कीजैतजियेनाहिं ॥
तातेपण्डितजनइन्हें गनतपवित्रनमाहिं ५
फलछांड़ैसंगहितजैकर्मकरैचितलाय ॥ अ
र्जुनयहमेरोजुमत निश्चयउत्तमदाय ६
जोअवश्य करनोकरम ताकोछांड़नदेइ ॥
तेछांड़ैअज्ञानते सोतामसगतिलेइ ७ यहै
जानिकर्मनतजैमतदेहोदुखहोइ॥यहतोरा
जसत्यागहै यामेंफलनाहिंकोइ ८ करनोक

मेंअवश्ययहजानिजुकीजैकर्म ॥ संगऔर
फलकोतजेसात्विकत्यागसुधर्म ६ बरेकर्म
मनसोंनहींभलेरहैनहिंलाग ॥ बुद्धिवंतसं
देहबिनुयहहैसात्विकत्याग १० देहवंतये
कर्मसबनाहींछांड़ैताहि ॥ कर्मफलनकोजो
तजै सोईत्यागीमाहि ११ स्वर्गनरकअरु
भूमियह कर्महिबिधफलयांच १२ अतेन
मोपैसुनजुतु कारनजोहैंपांच ॥ कहेसांख्य
सिद्धांतमेंकामसिद्धकोसांच १३ अधिस्था
नकर्ताजुहै कारनबहुतभाइ ॥ नानाबिधि
व्योपारअरुपंचमदेवगनाय १४ मनअरु
बचनशरीरकरि कर्मकरतयासाज ॥ भलो
बुरोकोऊकरैइनबिनसरैनकाज १५ जोनर
आतमएककोमानतहैकरतार ॥ देखतहूदे

खतनहींतेनरमूढ़गँवार १६ जाकीबुधिनहिं
लिप्तहै अहंकारनहिंजाय ॥ सोइनलोगन
कोहनतहनैनबंधनताय १७ अरकतीनोंक
र्मकेज्ञानज्ञेययज्ञतार ॥ कारणकर्मकर्त्ताकर
मसंग्रहतीनप्रकार १८ त्रिबिधिहोतगुण भे
द तेज्ञानकर्मकरतार ॥ गुणसंख्यामेंएकहै
जैसेसुनयेबार १९ जाकरदेखैजीवमेंअबिना
शीइकभाइ ॥ न्यारेमेंन्यारोनहींसात्विकज्ञा
नसुभाइ २० नानाभाइनमेंलखैन्यारोन्या
रोज्ञान ॥ भिन्नलखैसबजीवमें राजसज्ञान
सुजाय २१ पूरनजावै एकमें बिनकारण
केमित्त ॥ स्वारथबिनहैअल्पअतितामसज्ञा
नसुमित्त २२ संगरामअरुद्वैषबिन तीन
कर्मजोहोय॥ तजफलइच्छाकीजियेसात्वि

ककर्मजुजोय २३ जोकीजैंकरिकामना
कैधौंकरिअहंकार॥जामेंश्रमहैअतिघनोसो
राजसनिरधार२४ पौरुषहिंसाशुभअशुभ
द्रव्यखरचबिधिचार ॥ जोकीजैंअज्ञानते
तामसकर्मनिहार २५ धरिधीरजउत्साह
को तजैसंगअहंकार ॥ निर्बिकारसिधिअ
सिधिसमसात्विककर्मकरतार२६ रोगीचा
हैकर्म फललुब्धकहिंसकहोय॥ हर्षशोकसं
युक्तहै अशुचिकरतासोय२७ सुधबिनरहै
बिवेकबिनशठहिआलसीनित्त॥ सबहीकी
निंदाकरै अरुविषादयुतचित्त२८ थोरेदिन
केकाजको बहुतलगावैबार ॥ ताहीकोसब
कहतहैं यहतामसकरतार २९ बुधिअरु
धीरजतीनबिधि होतयुगुनकेभाय॥न्यारे२

सबकहौं अबहींतुमहिंसुनाय ३० काज
अकारजभयअभय औरप्रवृत्तिनिवृत्ति॥जा
नैमुक्तिनबंधसोसात्विकबुधिकीवृत्ति ३१
धर्मनिकोलखकार्यमेंकरै अकारजमानि॥
तैसेहोंतैसेगनैं बुद्धिराजसीजानि३२ जानै
पापहिपुण्यकर दंभअज्ञानीहोय॥ लखै
अर्थविपरीतसब बुद्धितामसीसोय ३३
जासोंइन्द्रीरोंकिये चित्तक्रियाअरुप्रान॥
योगयुक्तिनिहचलमहा धीरजसात्विक
जान ३४ धर्मअर्थअरुकामना जोधारतहै
आय॥ चाहैफलहिप्रसंगते धीरजराजसभा
य ३५ जोभयशोकविषादमद स्वप्नतानठ
हरात॥ दुष्टबुद्धिछांड़ैनहीं धीरजतामस
जात ३६ अबअर्जुनमोपैसुनौ सुखकेतीन

प्रकार ॥ जाकेअभ्यासैंकिये दुखकोहोइ
निवार ३७ पहिलेतोबिषसोंलगै बहुरिअ
मृतसोजोय ॥ सोसुखसात्विकहैकह्योबुधि
प्रसादतेहोय ३८ इन्द्रीविषयसंयोगते प
हिलेअमृतसमान ॥ पाछेजोबिषसोंलगै
सोराजससुखज्ञान ३९ पहिलेअरुपाछे
दुखतमोहितकरेजुदेह ॥ आलसनिद्राते
उठै तामससुखहैयेह ४० सोपहुंचीमेंकछु
नहीं सुरमेंअरु आकाश ॥ सतरजतमतीनों
गुननि बंध्योनमायाफांश ४१ द्विज
क्षत्रियअरुबैश्यके औरशूद्रकेकर्म ॥ नि
जसुभावगुणसोंभयो न्यारेन्यारेधर्म ४२
समअरुदम तपशौचपुनि सरलताजुअ
रुशान्ति ॥ आस्तिकज्ञानविज्ञानअरुब्रह्म

कर्मकोभांति ४३ शूरतेजधीरजचतुरयुद्ध
माहिंनपराइ ।।तेईठकुरईसोंरहैक्षत्रियकर्म
सुभाइ ४४ खेतीगौरक्षावणिजबैश्यकर्मये
मानि ।। सबहीकीसेवाकरैशूद्रकर्मयेजानि
४५ अपने २ धर्मतेंसिद्धिलहैसबकोइ ।।
सोबिधिअबमोपैसुनौ कामसिद्धिजोहोइ
४६ जातेउपजतजीवसबजिनकीनोविस्ता
र।।कर्मकरैताकोभजैसिद्धिलहैनरसार ४७
नीकेहूपरधर्मतेनिर्गुनभलोनिजधर्म ।। क
छुगायनपावैनहींकरताअपनोकर्म ४८ दो
षसहितनिजधर्मलखरहैनक्योंहूत्याग ।।
दोषभरैआरंभसबधूमसहितज्योंआग ४९
लगनबुद्धिकहनहिंकरैजीतेमनतनआश ।।
परमधर्मनिहकर्मको पावैकरिसंन्यास ५०

सिद्धिपाइपरब्रह्मकोजैसेपावैसार ॥ कहौं
सुहोंसंक्षेपसों निष्टाज्ञानअपार ५१ जग
तरहेबिशुसिन्धुसोंधीरजसोमनधारि ॥ श
ब्दआदिबिषयातजै रागद्वैषकोमारि ५२
रहैदुरयोएकान्तमें लघुभोजनमनजीत ॥
ध्यानयोगतत्परसदायहबिरागकीरीत ५३
क्रोधपरिग्रहँकामबल दर्पऔरअकार ॥
ममतातजिनिर्मलहैशांतियोगमेंसार ५४
ब्रह्मभयोपरसन्नमनशोचतकरैनचाह॥सब
जीवनकोसमलखैप वैभक्तिप्रबाह ५५ प
राभक्तिअतिऊंचहैतामेंकछूनहेत ॥ सतसं
गतितेपाइयेजसेप्रमकेखेत ५६ मोकोजा
नैभक्तिकरजितनोहोजाभाय ॥ मोहिंजानि
केतत्वसोंमेरीभक्तिकराय ५७ मोकर्मनि

कोनितकरैमेरोआश्रमपाइ ॥ मोप्रसादतें
सोरहैअक्षयपदवीपाइ ५८ मनसोंमोकोक
र्मकरिमोतत्परतालेइ ॥ बुद्धियोगकोसेइकै
मोर्हांमेंचितदेइ ५९ मोप्रसादतेदुर्ग सबत
जजैहैअनयास ॥ अहंकारतूबिनशनैलहि
हैतूजुबिनाश ६० लरोंनहींतूयहकहतअहं
कारकोमान ॥ यहतोकोआरूढ़हैप्रकृतिल
रैहैआन ६१ अर्जुनअपनेकर्मकोतूराखैहै
सोइ ॥ करोंनचाहतमोहतेपरबशकरिहैजो
इ ६२ ईश्वरसबकेहियेमेंअर्जुनरहतसुगूढ़॥
जीवभ्रमावतहैसदाकरिमायाआरूढ़ ६३
होहुसदावाकीशरनअर्जुनतूसबभाइ ॥ अ
बिनाशीथिरशांतिपदताप्रसादतेपाइ ६४
ज्ञानकह्योंतुमसोंजुमैं सोजगपरगटनाहिं॥

जोजानोसोईकरोयाहिसजोजियमाहिं ६५
जोकछुहै सबतेअधिक परमदुरोयहज्ञान॥
तूदृढ़बुद्धिजो मित्रमो तोहितकहत बखान
६६ मोकोभजिभजिनम्रह्वै नमिमोमेंमन
राखि॥ अन्तसमयहोमोहिंमें प्यारेयहतुम
साखि ६७ सबधर्मनकोछांड़िकैमोशरणा
हिंतूआइ॥ दूरकरतसबपापहौंशोकतजोया
भाइ ६८ जाकेतपनहिंभक्तिनहिं औरसुश्रू
षानाहिं॥ तासोंतूयहजिनकहैमोदेखोजग
माहिं ६९ मोभक्तनसोंजोकहैपरमदुसोयह
ज्ञान॥ सोमेरीभक्तिहि लहै मोमेंरहैनिदा
न ७० मोकोप्यारोबहुतयह हौंप्यारोहौं
जाहि॥ वहमुहिंराखतहियेमें हौंराखतहि
यवाहि ७१ धर्मबादजोहमकियो पढ़ैजुको

ऊजानि ॥ ज्ञानयज्ञतिनहोंभजों यहमेरोम
तमानि ७२ श्रद्धायुतदोषनिबिना याहिसु
नैजोकोय ॥ पुणयवन्तलोकनलहैं मुक्तिजुता
कीहोय ७३ चितएकाकोहोसुनो तेअर्जुन
यहधर्म॥ मिथ्योमोहअज्ञानतबऔरमिथ्यो
वितिधर्म ७४ ॥ अर्जुनउवाच ॥ मोहूयोआई
शरण गह्योसोश्रीभगवान॥भयोदूरिसंदेह
अब तुमआज्ञापरधान ७५ ॥ संजयउवाच ॥
हरिअर्जुनकीबातये सुनीजोयहमैंभाइ ॥ अ
चरजरूपअनूपअति रोमहर्षचितचाइ ७६
परमदुरगमतयहजुहों सुन्योव्यासपरसा द
योगेश्वरश्रीकृष्णजू निजमखकियोबिवाद ॥
७७ बारबारसुमिरतजुहोंवासेवावहिराज॥
हर्षहोतमोकोमहा अतिपवित्रकेसाज ७८

अद्भुतरूपश्रीकृष्णको सुमिरिसुमिरिहोजा
हि ॥ हर्षहोतमोकोमहाविस्मयकोनिर्बाहि
७९ योगेश्वरश्रीकृष्णजू अर्जुनहैंजाठौर ॥
तहाँबिजयअरुजीतहैअटलसंपदाऔर ८०
यहअद्भुतरतनावलीनिजमुखकियोबखान॥
बारबारनिरधारकरिपराभक्तिकोज्ञान ८१
भक्तिवश्यश्रीकृष्णजू यहैकियोनिरधार ॥
करैभक्तिइच्छासबै यहैभक्तिकोसार ८२भ
गवद्गीताजोकोऊ पढ़ैसुनैमनलाइ ॥ पावै
भक्तिअखण्डसो श्रीहरिसदासहाइ ८३
गीतादिनप्रतिउच्चरै सदासुखीजगमाहिं ॥
मनसाबाचाकर्मनातिहिसमकोऊनाहिं८४
जोकोउचाहैभवतर्यो कृष्णकमलदृगपा
स ॥ औरसकलश्रमछांड़ितो करिगीताअ

भ्यास ८५ जबलगस्मृतिभानुकी तापतष
तसबदेश ॥ दृष्टिपर्योतबलगनहीं हरिगी
ताराकेश ८६ हरिबल्लभभाषारच्यो गी
तारुचिरबनाय ॥ सदाचारबरणनकियोअ
ष्टादशअध्याय ८७ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयो
गशास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुनसंवादेमोक्षसंन्या
सयोगोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

इतिश्रीभगवद्गीतासम्पूर्णम् ॥